(1)

राजस्थान विधान सभा की कार्यवाही का वृत्तान्त

अंक-7 **दसवीं विधान सभा के सातवें सत्र का पहला दिवस** **संख्या-1**

गुरुवार,

27 जून, 1996

राजस्थान विधान सभा की बैठक 11.00 बजे विधान सभा भवन, जयपुर में प्रारम्भ हुई।

(श्री शंतिलाल चपलोत, अध्यक्ष, पदासीन)

राष्ट्र गीत

श्री अध्यक्ष : वन्दे मातरम्।
वन्दे मातरम्। वन्दे मातरम्।
सुजलाम् सुफलाम्। मलयज शीतलाम्।
शस्य श्यामलाम् मातरम्। वन्दे मातरम्।
शुभ्र ज्योत्सना पुलकित यामिनी।
फुल्ल कुसुमित ध्रुमदल शोभिनी।
सुहासिनी सुमधुर भाषिणी।
सुखदाम् वरदाम् मातरम्।
वन्दे मातरम्। वन्दे मातरम्।

सन्देश

महामहिम राज्यपाल का कृतज्ञता ज्ञापन

मुझे माननीय सदस्यों को सूचित करना है कि राज्यपाल महोदय द्वारा दिये गये अभिभाषण पर **दिनांक 14 मार्च, 1996** को सदन द्वारा पारित **धन्यवाद प्रस्ताव** के उत्तर में निम्नलिखित सन्देश राज्यपाल महोदय से प्राप्त हुआ है :—

"अ. शा. पत्र क्रमांक 1264

दिनांक : 18 मार्च, 1996

प्रिय अध्यक्ष महोदय,

आपका अर्द्ध शासकीय पत्रांक 1014/ सदन /विस/96/14051 दिनांक 15 मार्च, 1996 को प्राप्त हुआ। माननीय सदस्यों द्वारा प्रकट कृतज्ञता के लिए मैं उनका आभारी हूं। आपसे निवेदन है कि आप कृपया मेरे कृतज्ञता ज्ञापन को माननीय सदस्यों को पहुँचाने का कष्ट करें।

बलिराम भगत"

सचिव, विधान सभा गत सत्र में पारित विधेयकों का विवरण सदन की मेज पर रखेंगे।

अनुमति प्राप्त विधेयक

राज्यपाल महोदय की अनुमति प्राप्त विधेयक

श्री सचिव (राजस्थान विधान सभा) : महोदय, मैं दसवीं राजस्थान विधान सभा के षष्ठम् सत्र में पारित उन विधेयकों का विवरण सदन की मेज पर रखता हूं जिन पर राज्यपाल महोदय की अनुमति प्राप्त हो चुकी है :—

(1) राजस्थान कराधान अधिकरण (संशोधन) विधेयक, 1996

(2) राजस्थान विनियोग (संख्या 1) विधेयक, 1996

(3) राजस्थान विनियोग (लेखानुदान) (संख्या 2) विधेयक, 1996

श्री अध्यक्ष : श्री देवीसिंह भाटी, सिंचाई मंत्री, सिंचाई विभाग की अधिसूचना सदन की मेज पर रखेंगे। ...(व्यवधान)

अनुरोध

राज्य में बाढ़ की स्थिति पर विचार

श्री हरिसिंह (कुम्हेर) : अध्यक्ष महोदय, मैंने स्थगन प्रस्ताव दिया है। (व्यवधान)

श्री शैलेन्द्र जोशी (बांदीकुई) : अध्यक्ष महोदय, पूरे राजस्थान में बाढ़ से तबाही हो रही है और ऐसी स्थिति में बाढ़ पर चर्चा नहीं करायी जाकर अध्यक्ष महोदय द्वारा पहले इस पर चर्चा कराना...(व्यवधान) बाढ़ से राजस्थान में 50 से ज्यादा आदमियों की मृत्यु हो चुकी है...(व्यवधान)...रेल मार्ग अवरुद्ध हो गया है। बाढ़ से राजस्थान तबाह है...(व्यवधान)...ऐसी स्थिति में पहले बाढ़ पर चर्चा करायें। माननीय अध्यक्ष महोदय, पूरा राजस्थान बाढ़ की चपेट में आ गया है। (व्यवधान) आपको महत्ता की दृष्टि से देखना चाहिए कि बाढ़ के कारण राजस्थान के जन जीवन की क्या स्थिति हो रही है। (व्यवधान) आज लोगों को खाने के लिए सरकार ने जो सहायता दी है वह ऊंट के मुंह में जीरा है (व्यवधान) यह हवाई सर्वेक्षण से कुछ नहीं होता है, जब तक वास्तव में उनको इमराद नहीं दी जाय। ...(व्यवधान)

श्री अध्यक्ष : बिराजें। ...(व्यवधान)

श्री शैलेन्द्र जोशी : ...(व्यवधान)...एक टापू बन गया है। (व्यवधान) न तो कोई राहत सामग्री जा रही है, न कोई राहत कार्य किये जा रहे हैं। ऐसी स्थिति में सरकार को...(व्यवधान)

श्री आर. पी. शर्मा (भरतपुर) : लोग भूखे मर रहे हैं। लोग फंसे पड़े हैं। (व्यवधान)

श्री अरुण सिंह (डीग) : अध्यक्ष महोदय, पिछले...(व्यवधान)...तीन दफे भरतपुर जिले में बाढ़ आयी है। (व्यवधान)

श्री आर. पी. शर्मा : पहले बाढ़ को लिया जाय...(व्यवधान)

श्री अरुण सिंह : अध्यक्ष महोदय, भरतपुर डूब गया है, डीग डूब गया है। (व्यवधान)

श्री रामस्वरूप मीणा (टोडाभीम) : अध्यक्ष महोदय, बाँध टूट रहे हैं। (व्यवधान) लोगों को खाद्य सामग्री तक नहीं मिल रही है। तबाही हो गयी है सारे सवाई माधोपुर में।...(व्यवधान)

श्री अध्यक्ष : आप बिराजें। ...(व्यवधान)

श्री शैलेन्द्र जोशी :...(व्यवधान)...यह कोल्ड स्टोरेज का आलू...(व्यवधान)...

श्री नाथूराम अहारी (डूंगरपुर) : अध्यक्ष महोदय, पूरे उदयपुर डिवीजन में बिलकुल पानी नहीं मिला है। लोग पानी के बिना तबाह हो रहे हैं। वहां पर पानी के बिना पशु मर रहे हैं, घास बिलकुल नहीं है। मेरा आपसे निवेदन है कि 31 जुलाई तक अकाल राहत कार्य चलाये जायं।

श्री अरुण सिंह : अध्यक्ष महोदय, पिछले 9 महिने में भरतपुर में तीन दफे बाढ़ आयी है। (व्यवधान)...नुकसान हुआ है (व्यवधान)

श्रीमती बीना काक (सुमेरपुर) : आपने तो रिजाइन कर दिया है। आप तो एम. एल. ए. शिप से रिजाइन कर चुके हो फिर यहां क्यों बैठे हो ?

श्री रतनलाल ताम्बी (जहाजपुर) : अध्यक्ष महोदय, भीलवाड़ा जिले में वर्षा अभी तक नहीं आयी है। बुआई नहीं होने के बाद भी वहां के प्रशासन ने पिछले कई काम बन्द कर दिये और पक्के काम भी शायद 30 जून तक बन्द कर दिये जायेंगे। (व्यवधान) प्रशासन ने समय पर न तो मजदूर बढ़ाये और न ही रुपये दिये।...(व्यवधान) सारे के सारे निर्माण कार्य अधूरे रह जायेंगे। (व्यवधान)

(श्री अरुण सिंह द्वारा सांकेतिक धरना एवं सदन के वैल में पुनः आसन ग्रहण)

श्रीमती इन्दिरा मायाराम (सांगानेर) : बाढ़ की जो स्थिति है वह बड़ी गम्भीर है इसलिए उसके बारे में सरकार पहले चर्चा करे। अध्यक्ष महोदय, पहले बाढ़ के बारे में चर्चा करें।

श्री रतनलाल ताम्बी : मेरी राज्य सरकार से मांग है कि 31 जुलाई तक वह काम बढ़ाये जायं। हालत बहुत खराब है, भुगतान भी वहां बराबर नहीं हो रहा है और निर्माण सामग्री के लिए अग्रिम राशि नहीं देने से सारे के सारे काम अधूरे हैं। इसलिए मैं राज्य सरकार से भीलवाड़ा जिले की अकाल की गम्भीर स्थिति को देखते हुए मांग करना चाहूंगा कि अकाल राहत कार्य 31 जुलाई तक बढ़ाये जायं। तीन-तीन महीने से भुगतान नहीं हुआ, निर्माण की सामग्री का पैसा नहीं दिया गया। अकाल राहत विभाग भ्रष्टाचार और विलम्ब करने के लिए जिम्मेदार है जिसके कारण अकाल राहत के काम अधूरे रह जायेंगे। मजदूर भी कम संख्या में लगाये गये। जनता के साथ भेदभाव किया गया, बहुत बड़ा अन्याय किया गया है। इसलिए वह सारे के सारे काम अधूरे रहने की सम्भावना है। मैं आपके मार्फत माननीय मुख्य मंत्री महोदय से अनुरोध करना चाहता हूं—

श्री अध्यक्ष : आप बिराजें।

श्री रतनलाल ताम्बी : कि आप जिला प्रशासन से वहां की स्थिति के हालात मालूम करके जो काम चल रहे हैं उनकी अवधि 31 जुलाई तक बढ़ायी जाय और तत्काल किसानों के पैसे का पंचायतों से भुगतान कराया जाये। एक-एक, डेढ़-डेढ़ महीने पैसे का भुगतान नहीं होने से सामग्री का अभाव है जिससे सारे के सारे काम अधूरे रह जायेंगे। वह किसी भी योजना में इतनी बड़ी तादाद में पूरे नहीं हो पायेंगे। यह मेरा आपसे अनुरोध है।

श्री अध्यक्ष : बिराजिये।

श्री शैलेन्द्र जोशी : अकाल राहत के कार्यों की अभी शुरूआत ही नहीं हुई है। सारा पैसा लेप्स हो जाएगा—(व्यवधान) इसलिए कम से कम 15 अगस्त तक तिथि बढ़ायी जाय। (व्यवधान)

श्री मदन मोहन (खैरथल) : अध्यक्ष महोदय, जिस तरह से अलवर जिले में बाढ़ आ रही है—(व्यवधान)

श्री अमराराम (धोद) : जो बाढ़ आ रही है उससे सैंकड़ों गांव बरबाद हो गये, हजारों किसानों के मकान धराशाही हो गये, पशु मर गये। (व्यवधान)—यह स्थिति है। (व्यवधान) एक इंच भी पानी निकालने में लोगों को—(व्यवधान) बचाने में नकारा साबित हुई है इसलिए इस पर तुरन्त चर्चा करायी जाये। (व्यवधान)

श्री मदन मोहन :—(व्यवधान)—सरकार सोयी हुई है। (व्यवधान) जिस तरह से आज गरीब जनता के साथ अन्याय हो रहा है, इस बाढ़ की तबाही से निपटने के लिए कोई इंतजाम नहीं किया जा रहा है। (व्यवधान)

श्री रामस्वरूप : पांचना बांध टूट गया है। (व्यवधान)

श्री शैलेन्द्र जोशी : अकाल राहत कार्य का सारा पैसा बारिश में बह जाएगा जब तक कि समय रहते तारीख नहीं बढ़ायी जाएगी। (व्यवधान) सारे काम अधूरे रह जाएंगे और जो पैसा है उसका अपव्यय होगा, दुरुपयोग होगा। (व्यवधान) माननीय मुख्य मंत्रीजी घोषणा करें कि 15 अगस्त तक अकाल राहत कार्यों की अवधि बढ़ायी जाती है जिससे कि अकाल राहत कार्य पूरे हों और पैसा पूरा खर्च हो

(श्री शैलेन्द्र जोशी)

सके। (व्यवधान) और श्रमिकों को रोजगार मिल सके। (व्यवधान)

श्री अध्यक्ष : आप बिराजें। (व्यवधान)

श्री बृजेन्द्र सिंह सूपा (बयाना) : अध्यक्ष महोदय, हमारे भरतपुर जिले में न तो कोई काम हो रहा है, न सड़कों की मरम्मत हो रही है। (व्यवधान) दुबारा बाढ़ आयी है। (व्यवधान) इसके जिम्मेदार मुख्य मंत्रीजी हवाई सर्वेक्षण —(व्यवधान)—1995 के बाद वैसी की वैसी स्थिति भरतपुर जिले की है। अध्यक्ष महोदय, यह भरतपुर जिले के साथ भेदभाव है। (व्यवधान)

श्री हीरालाल सहरिया (किशनगंज) : —(व्यवधान)—मैं माननीय गृह मंत्रीजी से अनुरोध करना चाहता हूं कि जो पूर्व में आर. ए. सी. की चौकियां तैनात थीं उन पर आर. ए. सी. की चौकियों को वहां हमेशा के लिए स्थापित रखें ताकि शाहबाद का अमन चैन रह चके। मेरा आपसे यही अनुरोध है।

श्री आर. पी. शर्मा : माननीय अध्यक्ष महोदय, मैं एक बात निवेदन करना चाहता हूं कि गरीब से गरीब व्यक्ति भी बरसात आने के बाद, चाहे उसके पास पैसा नहीं हो, कहीं से पैसा उधार लेकर के अगर बरसात में उसका मकान चूता है या बरसात में कहीं पानी आ जाता है तो वह कर्ज लेकर भी अपने मकान को बनाता है लेकिन + + + है इस सरकार के लिए कि भरतपुर जिले में तीन बार बाढ़ आयी और तीन बार बाढ़ आने के बाद भी इस सरकार ने इतनी भी फिक्र नहीं की कि वह भरतपुर जिले को बचाने के लिए बंधों की मरम्मत के लिये, बंधों को बनाने के लिये पैसा इकट्ठा करे। मुझे साफ तौर से कहना पड़ रहा है कि सरकार में, जैसा कि मैं आदरणीय कुलिश जी को आज याद करता हूं ऐसे मौके पर, कोल्ड स्टोरेज का आलू जिस तरह से उन्होंने सरकार को कहा है उसी तरह से सरकार काम कर रही है। उन्होंने साफ कहा था कि आज हमारे नेता जो हमारे यहां सरकार चला रहे हैं, वे एशो-आराम और सत्ता से धन बटोरने में लगे हुए हैं। उनको राजस्थान की जनता के प्रति, राजस्थान के गरीब के प्रति, राजस्थान के किसानों के प्रति कोई संवेदना नहीं है इसलिए मैं निवेदन करना चाहता हूं कि—

श्री अध्यक्ष : आप बिराजिये। बिराजिये।

श्री आर. पी. शर्मा : ऐसी सरकार के प्रति जनता ने अपना मन और धन देकर इनको सत्ता में इसलिए बैठाया था कि सरकार गरीबों का भला करे लेकिन मुझे कहने में दुःख होता है, खास तौर से मैं आदरणीय मुख्यमंत्रीजी का बहुत आदर करता हूं। आदर इसलिए करता हूं कि आप प्रशासन में सक्षम हैं लेकिन किस तरह से क्या भूल हुई, क्यों ऐसा हुआ और किस तरह से यह बाढ़ आयी भरतपुर में जो इस तरह से जन और धन की हानि कर रही है। मैं निवेदन करना चाहता हूं कि आप इन्क्वायरी बैठायें इस बात के लिए, मैंने पहले भी कहा था कि Prevention is better than cure. (व्यवधान)

श्री रामप्रताप कासनियां (पीलीबंगा) : दुःख **इसलिए हो रहा है कि बारिश समय से पहले** हो गयी, अकाल नहीं पड़ा।

श्री आर. पी. शर्मा : आप इन्क्वायरी बैठायें, आप इस बारे में जांच करवायें कि किन कारणों से भरतपुर में बाढ़ आती है।

+ + + शब्द अध्यक्षपीठ के आदेशानुसार अपलोपित किया गया।

श्री अरुण सिंह : अध्यक्ष महोदय, भरतपुर का नागरिक द्वितीय श्रेणी का नागरिक है यहां जयपुर में। हमारे साथ सौतेला व्यवहार हो रहा है। हम दूसरी श्रेणी के नागरिक हैं यहां जयपुर में। (व्यवधान)

श्री रामस्वरूप मीणा : भरतपुर में बाढ़ आने का कारण पांचना बांध का टूटना है। पांचना बांध अगर नहीं टूटता तो भरतपुर में बाढ़ नहीं आती। आप पांचना बांध को बनवाइये। जब तक पांचना बांध नहीं बनवाओगे, भरतपुर में बाढ़ नहीं रुक सकती। सारी तबाही इस पांचना बांध के कारण हुई है इसलिए पांचना से किसान परेशान हैं। वहां के तालाब, जोहड़े जितने भी थे, सारा पानी निकलकर वहां चला गया, उसने भरतपुर में भी तबाही कर दी।

श्री अध्यक्ष : आप बिराजिये। बिराजिये।

श्री रामस्वरूप मीणा : इसलिए माननीय अध्यक्ष महोदय, माननीय मुख्य मंत्रीजी और मंत्रीजी से निवेदन करना चाहूंगा कि हमारे विधान सभा क्षेत्र टोडाभीम जिसमें उसकी सप्लाई होती है और वह सप्लाई भी पिट गयी, भरतपुर में बाढ़ आ गयी इसलिये सबसे पहले पांचना बांध को बंधवायें ताकि यह तबाही रुक सके, यही निवेदन है मेरा। (व्यवधान)

श्री रूपाराम (मकराना) : अध्यक्ष महोदय, बाढ़ एक प्राकृतिक आपदा है, प्रकृति द्वारा दी हुई आपदा है। प्रकृति जब विकराल रूप धारण कर लेती है तो मनुष्य को कुछ दुःख होता है—

श्री रिछपाल सिंह (डेगाना) : अध्यक्ष महोदय, नागौर जिले में बाढ़ आयी हुई है। माननीय डिप्टी सी. एम. साहब (व्यवधान) 22 तारीख से 27 तारीख तक नागौर में पानी निकालने के लिए पम्प नहीं पहुंचे हैं। ये + + + देकर आये थे, अब उनका दूध कब आयेगा। (व्यवधान) माननीय अध्यक्ष महोदय, कल आप वहां कहकर आये थे कि आज रात को पम्प पहुंच रहे हैं। पांच दिनों में नागौर में पानी निकालने के लिए पम्प नहीं पहुंच सके, क्या हालत है प्रशासन की—(व्यवधान)

श्री हरिसिंह (कुम्हेर) : जनता बहुत परेशान है, जनता की तबाही हुई है, लोगों के घर बरबाद हो गये हैं। (व्यवधान) कुछ काम दिलवाइये। —(व्यवधान)

श्री रिछपाल सिंह : जिनको पता नहीं कि बाढ़ क्या है। क्या हालत है प्रशासन की वहां। पचासों गांव पानी में डूबे हुए हैं (व्यवधान) वहां पानी से सड़ने और बदबू से बीमारियां और फैलने लग गयी अध्यक्ष महोदय।

श्री रूपाराम : अध्यक्ष महोदय, बाढ़ एक प्राकृतिक आपदा है लेकिन मकराना में मनुष्य के द्वारा मनुष्यों पर प्रकोप पैदा किया जा रहा है।

श्री रामेश्वर लाल चौधरी (नावां) : माननीय अध्यक्ष महोदय, माननीय डिप्टी सी. एम. साहब एक दफा गये हैं और जाकर कुछ 100-50 पैकेट्स गिरवा दिये। उससे कोई गांव वालों का भला होने वाला नहीं है, न कोई बाढ़ के अन्दर पम्प भेजे, आज तक पम्प नहीं पहुंचे हैं। इस तरीके से गरीब की गत गरीब ही जान सकता है। ये क्या जाने कि गरीब की क्या हालत होती है। जिनके मकान गिरे हैं उनको मकान (व्यवधान) 25 से ज्यादा आदमी मारे गये हैं (व्यवधान) गरीब की कोई इच्छा पूरी नहीं होती। मेहरबानी करके जिस गरीब का

+ + + अभिव्यक्ति अध्यक्षपीठ के आदेशानुसार अपलोपित की गयी।

(6)

(श्री रामेश्वर लाल चौधरी)

नुकसान हुआ है, उस गरीब को कम से कम सहायता तो दिलवाइये ताकि राहत मिल सके। (व्यवधान)

एक माननीय सदस्य : अजमेर और बीकानेर का रास्ता आज भी बंद है।

श्री लक्ष्मण सिंह (भीम) : माननीय अध्यक्ष महोदय, मैं एक निवेदन करना चाहूंगा। आज राजस्थान में जो बाढ़ आयी हुई है, उसी के कारण से माननीय सदस्य उत्तेजित हैं। मैं यह मानता हूं कि सदन की यह परम्परा है कि पहले दिन श्रद्धांजलि दी जाती है लेकिन जब श्रद्धांजलि देने से पहले यहां पर हाउस की टेबल पर कुछ माननीय मंत्रीजी कुछ अपने पेपर्स लेकर कर रहे हैं तो इसका मतलब है कि श्रद्धांजलि से पहले भी कुछ कार्य यहां पर किया जा रहा है तो राजस्थान में आज जो बाढ़ की स्थिति है, उसको देखते हुए अपेक्षा तो यह थी माननीय मुख्यमंत्री जी से और सरकार से कि वह कुछ परम्परा से हटकर इस बाढ़ के संदर्भ में जो सरकार कार्य करने जा रही है, उसके सम्बन्ध में अपना दृष्टिकोण प्रस्तुत कर दे, कुछ माननीय सदस्यों की सुनते तो मेरे ख्याल से आज की स्थिति को देखते हुए उपयुक्त होता। आज से तीन दिन के पश्चात् विधान सभा की बैठक होगी। कल विधान सभा की बैठक नहीं हो रही है, शनिवार को नहीं होगी और रविवार को नहीं होगी और चार दिन तक, विधान सभा की बैठक कल नहीं है, यह तय हो गया है, चार दिन तक विधान सभा के माननीय सदस्यगण इस गम्भीर विषय पर उद्वेलित होते रहे और आज विधान सभा जो प्रारम्भ हो गयीं है, उसमें औपचारिकता पूरी करने के लिए मंत्रीगण अपने पेपर्स सदन की टेबल पर रखेंगे और सदस्यगण जब इतने गम्भीर विषय को लेकर यहां पर चर्चा नहीं कर सकते, अपनी बात नहीं कह सकते तो मैं निवेदन करना चाहूंगा कि कुछ परम्परा तो हम निभायें कि दिवंगत नेताओं को श्रद्धांजलि अर्पित की जाये थोड़े समय के पश्चात् में, लेकिन उसके पहले मंत्रीगण के पेपर्स टेबल पर रखने के पहले इस विषय के ऊपर कुछ समय के लिए चर्चा कर ली जाये, उससे कहीं कुछ बिगड़ने वाला नहीं है। (व्यवधान)

श्रीमती इन्दिरा मायाराम (सांगानेर) : अध्यक्ष महोदय, मैं बहुत देर से खड़ी हूं, मुझे बोलने दें। पारीक साहब, मुझे पहले एक मिनट के लिए बोलने दें।

श्री राजेन्द्र पारीक : अध्यक्ष महोदय, बाढ़ की जो विभीषिका है, इसके बारे में पूरा का पूरा राजस्थान इस बात से बखूबी वाकिफ है कि जिस तरह से गांवों में बाढ़ आयी है, उससे फसलों को नुकसान तो हुआ ही हुआ, मेरे क्षेत्र में अधिकतर गांवों में मैंने देखा है, माननीय अध्यक्ष महोदय, खेत की पूरी की पूरी जमीन बह गयी। ऐसे गम्भीर मसले पर आज यदि यह मैसेज जाएगी कि सरकार तो उदासीन है और प्रतिपक्ष इस मसले पर चर्चा करने को उतारू है, तो आज जनता में यह मैसेज जाना कोई बहुत अच्छी परम्परा नहीं है। मैं आपके माध्यम से यह निवेदन करना चाहूंगा, यह गहन मसला है। इस पर बहुत गम्भीरता से मनन होना चाहिए और पूरे राजस्थान को आज इस **बाढ़ से जो तकलीफ हो रही है, इसके कैसे ज्यादा से ज्यादा छुटकारा दिलाया जा सके,** कैसे उनको रिलीफ दी जा सके। अब आपने जमीन के मामले में तो कह दिया लेकिन पशु इतने मरे हैं, इतने मवेशी मरे हैं, उन मवेशियों के मरने पर आज सरकार दो रुपये देने को तैयार नहीं है, इतना गम्भीर मसला है। उसको आप इतने हल्केपन से मत लीजिये। सरकार

(श्री राजेन्द्र पारीक)

को आप निर्देश दीजिये। (व्यवधान) स्वयं आप बैठकर (व्यवधान)

श्री रूपाराम : अध्यक्ष महोदय, मेरी बात इन सबसे हटकर बहुत महत्त्वपूर्ण है। बाढ़ आना, बाढ़ का ज्यादा होना, यह प्रकृति के हिस्से की बात है।

श्री राजेन्द्र पारीक : सारे के सारे माननीय सदस्य यहां पर मौजूद हैं, अपने-अपने क्षेत्र के बारे में आपको जानकारी देंगे। आप स्वयं क्षेत्रों का विजिट करने जा रहे हैं, क्षेत्रों का दौरा करने जा रहे हैं और इतने गहन मसले के ऊपर आपने दौरा कर इतिश्री समझ ली। आप बैठकर इसको गम्भीरता से लेंगे, मैं समझता हूं, उसी से सारे प्रकरण का समाधान अच्छी तरह से होगा अदरवाइज आपने तो दौरा कर लिया और यहां बैठकर हमने हल्ला-गुल्ला कर लिया। उधर से उन लोगों ने सुन लिया और नतीजा शिफर है (व्यवधान)

श्री रूपाराम : अध्यक्ष महोदय, मेरी बात बाढ़ से हटकर है। बाढ़ प्रकृति की दी हुई देन है जो दुःखद है। हमारे लिए, मनुष्य के लिए लेकिन मकराना के बारे में मैं डेढ़ मिनट बोलूंगा। मेरे बोलने से पहले माननीय सदस्य खड़े हो जाते हैं। मैं कह रहा हूं कि ढाई साल में मैं तो एक-दो दफा ही खड़ा हुआ हूं। ढाई साल और निकलने वाले हैं, मेरी बात क्यों नहीं सुनते? कविता मैंने अच्छी बनायी है लेकिन अभी फिलहाल मकराना की एक छोटी सी खास समस्या है। हमारी प्रशासनिक व्यवस्था के बारे में आपको मैं डेढ़ मिनट में बता दूंगा। मकराना में मनुष्यों के द्वारा मनुष्यों पर प्रकोप पैदा किया जा रहा है। उसकी स्थिति भी बाढ़ जैसी है। बाढ़ में तो पानी भर जाता है और उससे आदमी मरते हैं, यह बात अलग है लेकिन थोड़ी सी बरसात होते ही हमारी लगभग पांच-छह हजार घरों की बस्ती प्रभावित हो जाती है। अभी भी इतने-इतने पानी से निकलकर आया हूं और यह स्थिति है। बाढ़ का जो प्राकृतिक बहाव था, उसको लोगों ने रोक दिया। वह पानी नागौर होता हुआ गुजरात जाता था। आठ साल से लगातार लिखता आ रहा हूं। जिला कलेक्टर को दिखा दिया लेकिन आज भी उसके बारे में कोई समाधान नहीं हो रहा है। मैं इस मामले को बहुत ही गम्भीरता से लेता हुआ बता रहा हूं। बाढ़ में मरने से पहले अगर थोड़ी सी और बरसात हो गयी तो 200-250 आदमी मरेंगे। मैंने कई बार अधिकारियों को लिखा, नेताओं को लिखा। तीन दिन पहले रात को 10 बजे मैंने सी. एम. साहब से बात करनी चाही तो मुझे पता चला कि वे भोपाल गये हैं। मैंने सी. एम. से बात की कि मैं बाढ़ में घिर रहा हूं, लगभग पांच-छह हजार आदमी घिरे हुए हैं। किसी न किसी तरह कलेक्टर साहब को, एस. पी. साहब को यह संदेश पहुंचाओ कि हमें बचायें। तो उन्होंने क्या किया कि 11 बजे पांच-सात पुलिस वालों को भेजा। वे बोले कि चलो थाने में। मैंने कहा, क्यों? उन्होंने कहा कि हमारे पास मैसेज आया है कि एम. एल. ए. को पकड़कर सुरक्षित स्थान पर पहुंचाओ तो मैंने कहा कि मैं तो तैरबो जाणू हूं, म्हारे घरां 33 आदमी और हैं छोटा-छोटा बच्चा, बांकों कांई करूं तो उन्होंने कहा कि नहीं, हम तो थाने में ले जायेंगे तो मैंने कहा कि मैंने थाने के लिए थोड़े ही कहा था। मैंने तो कहा कि हमारी ढाणी में अगर पानी और आ गया तो बचने का विकल्प क्या है? यह हकीकत बता रहा हूं। फिर मैंने कहा कि मैं तो नहीं जाऊंगा। सुबह लोग कहेंगे कि एम. एल. ए. ने गड़बड़ की है, उसको पीटकर थाने में रख दिया तो उन्होंने कहा कि हम क्या करें, एस. पी. साहब और कलेक्टर साहब का आदेश

(श्री रूपाराम)

है, आपको पकड़कर ले जायेंगे। मैंने कहा कि भाई, मुझे क्यों ले जाओगे। मैंने कहा कि अब थोड़ी सी बरसात और आ गयी तो आपके पास न तो एक मजूदर है, न एक कारीगर है। किसी भी तरह का साधन नहीं है और पूरी पांच हजार की बस्ती तीन-चार फीट तक हर बार डूब जाती है। कलेक्टर को बार-बार कहने से कोई सुनवाई नहीं होती है, तो यह मरणोपरांत राहत देने वाली बात है। मरने के उपरांत राहत देते हैं तो पहले क्यों नहीं दे देते? आप पहले क्यों नहीं सुन लेते हैं। अगर मेरी इस अस्थाई समस्या का आश्वासन चाहे अस्थायी समाधान हो, मुझे पांच-सात दिन में नहीं मिला तो मैं यहां पर भूख हड़ताल पर बैठूंगा। यह मेरा पक्का निश्चय है, क्योंकि मैं मेरी जनता की बात कैसे और कब सुनाऊंगा और जब बोलता हूं तो, अध्यक्ष महोदय, मैं आपके बिना आदेश के पहली बार ही बोला हूं, मुझे शर्म भी आयी है, यह व्यवस्था के खिलाफ है लेकिन मुझे पता चल गया कि एक बहुत बड़ा हथियार है जो नकटापणा का नहीं होगा तो कोई नहीं बोलने देगा।

श्री अध्यक्ष : विराजिये विराजिये।

श्री रूपाराम : इसलिए मेरी इस गम्भीरता को मेरी तरह गम्भीर होकर इसको गम्भीरता से लीजिये वरना 200-250-300 आदमियों—

श्री अध्यक्ष : आप विराजिये। यह जरूरी मसला नहीं है। (व्यवधान)

श्री रूपाराम : मुझे एक मिनट के लिए और बोलना है। लास्ट वाक्य बता रहा हूं। मुझे ऐसी संभावना बता दीजिये कि हम क्यों नहीं डूबेंगे। इस तरह की सम्भावना आप बता दें कि आप इस तरीके से नहीं डूबेंगे और नहीं मरेंगे। जहां मकराना की सबसे बड़ी समस्या है सड़कों की और उस बाढ़ की तो बता ही नहीं रहा हूं कि बड़ी खराब हालत है—(व्यवधान) कम से कम 250-300 मकान बह गये। नागौर जिले से आपके अधिकारी तो क्या, चपरासी तक कुचेरा, नागौर के पास नहीं पहुंचा है। धन्यवाद, नमस्कार। —(व्यवधान)

श्री अध्यक्ष : आप विराजें।

श्रीमती इन्दिरा मायाराम : अध्यक्ष महोदय, मैं बहुत देर से आपसे समय मांग रही थी—

श्री रिछपाल सिंह मिर्धा : माननीय अध्यक्ष महोदय, मैं आपके माध्यम से माननीय मुख्यमंत्रीजी से यह निवेदन करना चाहता हूं कि 22 तारीख से 27 तारीख तक पम्प नहीं पहुंचे हैं। अब तो कृपया नागौर में ऐसी व्यवस्था करवा दें कि पम्प पहुंच जाये। नागौर में पम्प कल रात तक नहीं पहुंचे हैं उप मुख्य मंत्रीजी।

श्री हरिशंकर भाभड़ा (उप मुख्य मंत्री) : 110 एच. पी. के पम्प पहुंच गये हैं, सात लाख लीटर पानी प्रति आवर से निकल रहा है। 110 एच. पी. के पम्प पहुंच चुके हैं। आप बहुत पुरानी बात कर रहे हैं।

श्री रिछपाल सिंह : कल रात तक नहीं पहुंचे।

श्री हरिशंकर भाभड़ा : मैं चालू करवाकर आया हूं। मैं स्वयं चालू कराकर आया हूं। सात लाख लीटर पानी प्रति घण्टा से निकल रहा है।

श्री रिछपाल सिंह : अपने हैलीकाप्टर से देखा होगा ऊपर से।

श्री हरिशंकर भाभड़ा : मैं वहां तीन दिन से बैठा हूं। आप तो वहां पहुंचे ही नहीं, मैं आपके कुचेरा तक गया हूं।

श्री रिछपाल सिंह : मैं जाकर आया हूं। आप कुचेरा में उतरे क्या? हम नीचे खड़े थे, आपको क्या पता। आप उतरे क्या कुचेरा में?

एक माननीय सदस्य : पानी में तैरना नहीं जानते हैं।

श्री अध्यक्ष : आप विराजें मिर्धा साहब।

श्री रिछपाल सिंह : पांच पैकेट गिराये हैं आपने गिनती के वहां। पांच पैकेट।

श्रीमती इन्दिरा मायाराम : अध्यक्ष महोदय, मुझे बोलने दें।

श्री अध्यक्ष : माननीय मदेरणा साहब फरमा रहे हैं।

श्री रिछपाल सिंह : फिर आप कह रहे हैं कि आप गये क्या, हम नीचे खड़े थे।

श्रीमती इन्दिरा मायाराम : एक मिनट में मेरी बात बोल देती तो नेता महोदय मेरी बात को भी ले लेते, शामिल कर लेते।

श्री राजेन्द्र पारीक : "सीख वाहि को दीजिये, जाको सीख सुहाय।" इनको तो सीख सुहाती ही नहीं।

श्री जगदीप धनखड़ (किशनगढ़) : हवन में हाथ क्यों जलाये जायें।

श्रीमती इन्दिरा मायाराम : अध्यक्ष महोदय, मैं यह निवेदन कर रही थी कि बाढ़ की जो स्थिति अलवर, भरतपुर में हो रही है और जो भयंकर स्थिति है उस पर तो चर्चा करनी है, नागौर में, लेकिन जयपुर में भी वही स्थिति होने वाली है। सिंचाई मंत्रीजी ने हमको लिखा कि रामचन्द्रपुरा का बांध, चीफ मिनिस्टर साहब चंदलाई गये तो वहां पर आश्वासन देकर आये। उसके बावजूद पिछले साल कुछ नहीं किया गया और वहां बांध टूट गया और एक आदमी मर गया। इसके बावजूद आज तक कुछ नहीं हुआ और गूलर के बांध के बारे में मैं बराबर लिखती रही। सिंचाई मंत्रीजी ने मुझे पत्र लिखा, हम देख कर आये, हम काम कर रहे हैं, पर कोई काम नहीं हुआ और उसके बाद में कल जे. डी. ए. कमिश्नर वहां जाते हैं, अपने साथ अपने सदस्यों को लेकर, विधायक को कोई पता नहीं है, मैं पत्र लिख-लिख कर थक रही हूं, इसका भी राजनीतिकरण किया जा रहा है, अगर हमारे वहां पर इस तरह के काम, हम लिख कर थक गये कि हमारे यहां फिर बाढ़ आयेंगी, हमारे यहां फिर लोग मरेंगे लेकिन उसके ऊपर तो कोई ध्यान नहीं दिया जा रहा और उसके बाद में वहां जाकर अपने साथ ले जाकर कह रहे हैं कि हम इसको ठीक करायेंगे। मैं यह जानना चाहती हूं कि विधायकों को इस तरह से आप क्यों अपमानित करना चाहते हैं। जब हम वहां पर बराबर कह रहे हैं कि हमारे यहां यह हालत है, बांध आ रहा है, तो जब वह जा रहे थे उनको देखने तो उनको विधायक को भी तो खबर करनी चाहिए थी। यह मेरा आपसे निवेदन है कि फिर वहां बाढ़ आयेगी, फिर आदमी मरेंगे, मैं आपको पहले से बता रही हूं कि इसका इन्तजाम पूर्व में ही करने की कृपा करें।

श्री अध्यक्ष : मदेरणा साहब।

श्री परसराम मदेरणा (नेता, प्रतिपक्ष) : सम्माननीय अध्यक्ष महोदय, पूर्व में जोधपुर सम्भाग में और अभी विशेषतया जयपुर, भरतपुर और अजमेर सम्भाग के नागौर जिले में बाढ़ की विभीषिका से अपार जन-धन और पशुधन की बरबादी हुई है, क्षति हुई है और इसीलिए शोकाभिव्यक्ति से पूर्व इस सदन के माननीय सदस्यों को अपनी चिन्ता को अभिव्यक्ति देने के लिए खड़ा होना पड़ा। जैसी कि आपसे मेरी टेलीफोन पर बातचीत हुई

(श्री परसराम मदेरणा)

थी, बाढ़ की विभीषिका के ही परिणामस्वरूप कल सदन की कार्यवाही नहीं करके कुछ माननीय सदस्य भी बाढ़ प्रभावित क्षेत्र में जाना चाहते हैं और मैं भी जाना चाहता हूं। राज्य सरकार अपनी तरफ से जो भी व्यवस्था कर रही है उसमें कुछ गति लानी चाहिये। मेरा स्वयं का अनुभव यह है कि जहां पानी अब स्टेगनेंट हो गया, उसमें अनाप-शनाप मरी हुई मवेशी पड़ी हुई हैं। राज्य सरकार ने निर्देश दिये हैं कि सरपंच खड्डा खुदवा कर इनको निकलवा कर बुरवा दें। यह कहीं भी सम्भव नहीं होगा। मैं स्वयं आंखों से देख कर आया हूं। मवेशी मरी हुई पड़ी हैं। गांवों में और कोई हाथ लगाता नहीं, एकाध हरिजन हैं, वह आगे-पीछे चला गया। कहीं पांच-पांच गांव में भी एक हरिजन नहीं है। मैं एक गांव में गया और मुख्य मंत्रीजी, हरिजन के ऑपरेशन हुआ है, उसने कहा कि मैं पानी में नहीं जाऊंगा, क्योंकि मवेशी बहुत मरी हुई है बाटिणी के अन्दर, लेकिन 13 बकरियां जो किनारे पर आ गयी हैं, मैंने स्वयं ने उसको, पारिश्रमिक तो नहीं कहना चाहिये, मैंने उसका उत्साह बढ़ाने के लिये कि भाई यह आदमी पानी के अन्दर है, गांव वालों को आइडेन्टिफाई किया दस आदमियों को कि तेरे साथ रहेंगे, यह खड्डे खोदने के लिये रहेंगे, वह अगर खड्दे खोदते नहीं हैं, तो मैंने उसको एक हजार रुपये मेरे पास से दिये। मैंने कहा वहां पर लोग टीबों पर बैठे हुए हैं, बीमार हैं, बूढ़ों और बच्चों के बुखार चढ़ रहा है और जहां पानी स्टेगनेंट हो गया है, नागौर में जिस वक्त अपने गये थे और हैलीपेड के ऊपर भी उप मुख्य मंत्रीजी, वह यह बात कर रहे थे कि हमने कुछ पम्प लगा दिये हैं, तो मैंने भी आपकी उपस्थिति में यह बात कही थी कलेक्टर को कि आप बड़े पम्प लगाइये, छोटे-मोटे म्युनिसपिलैटी के पम्पों से पानी आप ड्रा नहीं कर सकते, ड्रेग-आउट नहीं कर सकते। यह स्थिति बहुत से गांवों में बनी हुई है। बीमारी फैलने वाली है। मवेशी मरी हुई पड़ी हैं, बदबू दे रही हैं। आपके ट्यूब वैल बन्द हो गये हैं। हालांकि बहुत कोशिश के बाद में एक गांव में मैंने मुश्किल से एक ट्यूब वैल चालू करवाया, क्योंकि वह पानी पी रहे थे और बीमार थे, उलटियां हो रही थीं।

दूसरे, मैं यह निवेदन करूंगा कि शोकाभिव्यक्ति के बाद में चूंकि सदन की कार्यवाही, कल शुक्रवार, शनिवार और रविवार तीन दिन के लिये सदन नहीं बैठेगा—

एक माननीय सदस्य : शनिवार को तो नहीं रहता है।

श्री परसराम मदेरणा : शनिवार को रखने की बात तो आज बिजनिस एडवाइजरी कमेटी में तय कर लेंगे, अगर आप ऐसा चाहते हैं। लेकिन मैं समझता हूं कि करीबन 115-120 के आसपास गांव जलमग्न हैं इस क्षेत्र में। वहां पर इस सदन के माननीय सदस्यों का भी मौके पर पहुंचना और सरकारी अमले को भी गियर-अप करना बहुत जरूरी है। इसलिए कल की सदन की कार्यवाही स्थगित की जा रही है। मेरा आपसे विनम्र अनुरोध है कि अभी बिजनस एडवाइजरी कमेटी के बजट पर सामान्य वाद-विवाद को एक दिन के लिए डैफर कर दिया जाय और पहले रोज भी बाढ़ पर चर्चा हो जाय तो सरकार टाइमली प्रभावी कदम उठा सकेगी।

श्री भैरोंसिंह शेखावत (मुख्य मंत्री) : अध्यक्ष महोदय, मैं भी इस बात के लिये सदन से और आपसे क्षमा चाहूंगा कि परम्परा के विपरीत मैं इस विषय पर कुछ स्पष्टीकरण और वास्तविकता बताना चाहता हूं। अध्यक्ष महोदय, यह सब जानते हैं—

श्री परसराम मदेरणा : मैं मुख्य मंत्रीजी की राय से सहमत हूं। यहां हाउस की टेबल पर ले करने वाली भी कार्यवाही पहले नहीं होनी चाहिये।

श्री भैरोंसिंह शेखावत : क्या? हां, वह नहीं करनी चाहिए।

श्री परसराम मदेरणा : शोकाभिव्यक्ति का ऐसा अवसर है और भारत के सर्वोच्च पद पर बैठे हुए व्यक्ति इस संसार में नहीं रहे—

श्री भैरोंसिंह शेखावत : इसीलिए नहीं होनी चाहिए थी।

श्री परसराम मदेरणा : तो उस समय की गरिमा को देखते हुए अपने को सबसे पहले शोकाभिव्यक्ति लेनी चाहिये थी। जब मैंने रात को आपका बिजनस देखा, मुझे बहुत आश्चर्य हुआ, अध्यक्ष महोदय, और आप तो पहले ही कागज रखवा देते हैं टेबल पर, Heaven was not going to fall. आप परसों रखवा सकते थे। + + +

श्री भैरोंसिंह शेखावत : अध्यक्ष महोदय, यह सही है कि राजस्थान हमेशा के लिये अनावृष्टि के कारण से पीड़ित रहता था। पिछले कुछ वर्षों में राजस्थान अतिवृष्टि का भी शिकार हो रहा है। मैं ज्यादा इसका विश्लेषण नहीं करना चाहता, लेकिन आप सब लोग जानते हैं कि राजस्थान में मानसून 27 जून को एक्सपेक्टेड है। 27 के एक-दो दिन पहले भी हो जाय, 27 के बाद में भी हो जाय लेकिन यह मानसून तो पीछे रह गया और मानसून के पहले साइक्लोन के साथ जो राजस्थान के कई क्षेत्रों में वर्षा हुई वर्षा की भी कोई सीमा नहीं है। 3-3, 4-4 वर्षों में कुछ क्षेत्रों में 3-3, 4-4 वर्षों में जो वर्षा होनी चाहिये वो दो दिन में हो गयी कहीं एक दिन में हो गयी। एक हिसाब से आप यह कहें कि लगता है कि कई क्षेत्रों में अब इसको आप चाहे प्रकृति का प्रकोप कह दें या जनमानस के लिए विपदा कह दें। यह मनुष्य की की हुई नहीं है, यह प्रकृति जनित है और इस प्रकृति जनित समस्या का समाधान करने में मैं आपको 2-3 बात कह सकता हूं कि न तो सरकार के पास कोई धन की कमी रहेगी और न इसमें किसी प्रकार की राजनीति रहेगी। यह सब पीड़ित हैं मैं भी जानता हूं। मैं भी बहुत दुःखी हूं। जितने आप दुःखी हैं कम दुःखी मैं भी नहीं हूं। मैं कई स्थानों पर जाकर आया हूं जिस प्रकार की स्थिति मैंने देखी है, मैं सोचता हूं कि जल्दी से जल्दी इसका किसी तरह से समाधान हो, लोगों की पीड़ा दूर की जा सके। अब उस स्थान पर पहुंचना सम्भव नहीं है। हैलीकाप्टर से हमने कई स्थानों पर खाने के पैकेट डलवाये लेकिन मैं संतुष्ट नहीं हूं कि सब स्थानों पर हम पहुंच गये। कई स्थानों पर तो ऐसी स्थिति है कि पता भी नहीं लगता कि किस स्थान पर कहां डालें और क्या करें।

अब ऐसी समस्या है, इस समस्या का समाधान करने के लिये हमने आदमी की सहायता ली। आदमी को भी जितना मूवमेन्ट करना चाहिये था या मूवमेन्ट आदमी का जितना होना चाहिये था उतना मूवमेन्ट आदमी का नहीं हो पाया। पानी इस प्रकार बह रहा है आर्मी वाले भी इन्सान हैं वो भी कोई ऐसे देवता नहीं हैं कि सब जगह उड़कर चले जायें। वे भी अपनी तरफ से कर रहे हैं। राजस्थान सरकार के अधिकारी जहां-जहां भी लगे हुए हैं वह इस काम को मुस्तैदी से कर रहे हैं। मैं यह नहीं कहता कि सारा काम सही हो गया। उसका अन्दाजा तो तभी लगेगा जब सारे

+ + + अभिव्यक्ति अध्यक्षपीठ के आदेशानुसार अपलोपित की गयी।

(श्री भैरोंसिंह शेखावत)

स्थानों पर पहुंच कर लोगों की वास्तविक पीड़ा क्या है, कितना उनको कष्ट हुआ है, कितनी उनकी हानि हुई है उसका पूरा सर्वेक्षण कर लिया जाये। मैं इसी दृष्टि से कल विधान सभा की कार्यवाही, आज क्योंकि भरतपुर में बाढ़ की स्थिति बहुत ज्यादा भयंकर है और इसीलिये मैंने विरोधी दल के नेता से निवेदन किया कि वहां पर सब लोग जाना चाहेंगे। मैम्बर्स आ भी नहीं सकते। रात को भरतपुर से लेकर महुआ तक इतनी जोर की वर्षा हुई कि सारे युक्लिप्ट्स के पेड़ थे वो सड़क के ऊपर आ गये, रास्ते बंद हैं और मैम्बर्स यहां बैठे हैं। मैम्बर भी जाना चाहेंगे।

आज हालत यह है कि मैं चाहता हूं कि मैम्बर्स वहां जायें। मैम्बर्स भी चाहते होंगे कि हम उन क्षेत्रों में पहुंचे लेकिन जाने का कोई साधन नहीं है। सड़कों के ऊपर से पानी बह रहा है। बोट्स आप चला नहीं सकते। पानी का कोई भरोसा नहीं है। हैलीकॉप्टर जितने भी हैं, दो हैलीकॉप्टर वहां उस क्षेत्र में लगा रखे हैं। अब बाकी की जो हानि हुई है मैं आपको विश्वास से यह कह सकता हूं कि चाहे पशुओं की हानि हो, चाहे जन-धन की हानि हो, चाहे मकान टूटे हों उसमें सरकार उनको राहत देने में किसी प्रकार की कसर नहीं छोड़ेगी। इसमें राजनीति नाम का जिक्र करना, मैं आपको विश्वास से कह सकता हूं कि चाहे कितना ही पैसा लगे इसमें राजनीति किसी प्रकार की नहीं आयेगी। इसलिए मैं चाहता हूं कि इस समस्या का समाधान करने में राजनीति से ऊपर उठकर यदि हम सब मिलकर काम करेंगे तो निश्चित रूप से जनता को राहत मिलेगी। जनता में यह भावना जगाना कि सरकार कुछ नहीं कर रही है यह मैं समझता हूं कि पुरानी बातें हो गयी हैं, जो पुराने हथियार छोड़ें। आज आवश्यकता इस बात की है कि हम आपस में मिलकर इस समस्या का समाधान किस प्रकार से करें। इसीलिए मैं परसराम जी मदेरणा और बाकी के जितने भी माननीय सदस्य हैं, उनके साथ बैठकर बात करना चाहता हूं। अभी माननीय विपक्ष के नेता ने सुझाव दिया कि 30 तारीख को जिस दिन इसके ऊपर...(व्यवधान) जिस दिन बैठक हो मुझे इसमें कोई आपत्ति नहीं होगी, उस दिन दूसरा बिजनस नहीं लिया जाकर बाढ़ के सम्बन्ध में चर्चा कर ली जाय। आप भी चर्चा करेंगे और सरकार ने भी जो कुछ किया है उसकी मैं जानकारी दूंगा और जिलों से जिन-जिन गांवों की सूचना आयेगी उस सूचना के आधार पर मैं कहूंगा।

नागौर से आने वाले माननीय सदस्य श्री मिर्धा जी ने कहा कि वहां हैण्डपम्प और पम्प नहीं पहुंचे। मैंने सुबह भी जानकारी की थी कि वहां पम्प नहीं पहुंचे हैं या नहीं पहुंचे, कितना पानी निकल रहा है और कितना नहीं निकल रहा। लेकिन आप अन्दाजा लगा लें, मैंने मदेरणा साहब से जोधपुर से बात की थी कि नागौर में बहुत बड़ी समस्या हो रही है। आपने कहा 1944 के बाद में...

श्री परसराम मदेरणा : मैंने अबडेंट काश्त लिया था कि शायद गलत हो जाय। यही बाढ़ मैं 1942 में जब मैट्रीकुलेशन में था और दशहरे की छुट्टियों में गया था, तो यह पानी उस समय काबू में नहीं आया था, यह घूमा-फिरी कर रहा था। मैं देखने के लिये गया था ऊंट पर चढ़ करके इसलिए मुझे याद है। 1942 की बात है, अब 1996 है और चैत्र का महीना लग जाता है। सलीके की बात है। अब आप केल्कुलेट कीजिये। 54 साल पहले पानी आया था, फिर आया है...

श्री भैरोंसिंह शेखावत : मैं इसीलिये कह

रहा हूं कि वो 1944 हो या चाहे 1942 हो उस समय वर्षा आयी थी। आज अचानक इतनी वर्षा का आना और न तो कोई पब्लिक व्यवस्था कर सकती न कोई सरकार व्यवस्था कर सकती है। शायद 19 इंच वर्षा हुई है, 25 इंच वर्षा हुई है। अब कोई कल्पना नहीं कर सकता कि एक क्षेत्र में 25 इंच वर्षा हो जाय, लोग भी इसका अनुमान लगा लें और सरकार भी इसका अनुमान लगा ले कि नागौर में 25 इंच वर्षा होगी और इसको रोकने के लिये पहले किस प्रकार से व्यवस्था की जाय यह मैंने कहा है। संकट है इस संकट का समाधान करने की हम कोशिश करेंगे। मैंने मदेरणा साहब को कहा था, जोधपुर से टेलीफोन किया, जयपुर से टेलीफोन किया कि आपके गांव की तरफ पानी बढ़ रहा है, तो उस समय पानी बढ़ने की कोई बात नहीं थी। मुझे लग रहा था थोड़ा बहुत नक्शा मेरा देख हुआ है कि पानी नागौर से रिडमलसर होता हुआ इनके चाड़ी की तरफ जायेगा। आज इन्होंने सूचना दी कि पानी चाड़ी से दो किलोमीटर दूर रह गया लेकिन यह अन्दाज था उस अन्दाज के आधार पर मैंने कहा था कि अब इससे सावधानी का आप पता लगा सकते हैं कि हमने भी पूरा सोचा है कि नागौर का पानी निकलकर जायेगा कहां। जायेगा रिडमलसर की तरफ रिडमलसर के आगे जोधपुर जिले में प्रवेश करेगा—

श्री पूनमचन्द विश्नोई (फलौदी) : रिडमलसर जोधपुर में है।

श्री परसराम मदेरणा : करणू नागौर में है। करणू गांव 1942 में नहीं डूबा था। अब 20-30 फीट करणू में पानी है। 20-30 फीट ही रिडमलसर में पानी है और रिडमलसर से पानी दो-दो तरफ से आगे हो करके और चाड़ी की तरफ बढ़ा है वो दो-ढाई किलोमीटर पर पीछे फोर्स कम था, तो कल रात को वो वहीं पर रुक गया।

श्री भैरोंसिंह शेखावत : ऐसी स्थिति में मैं यह निवेदन करना चाहता हूं कि चर्चा के आपके कोई सुझाव होंगे सरकार उन सुझावों के बाद राहत किस प्रकार से दे सकती है उसमें मुझे कम से कम आपकी सहायता मिलेगी। इन्हीं शब्दों के साथ मैं कहना चाहता हूं कि एक तारीख को इसके ऊपर चर्चा होगी। एक तारीख तक आप भी अपने क्षेत्रों में चले जायं, जाकर देखें और जहां नहीं पहुंच सकते वहां मुझे कहें। जिस क्षेत्र में अब कोई कुम्हेर में, हरिसिंह बैठे हैं, हरिसिंहजी और मैं दोनों कोशिश कर लें तो कुम्हेर नहीं पहुंच सकते हैं। आज अरुणसिंह जी कहें कि मैं डीग जाना चाहता हूं तो डीग नहीं पहुंच सकते हैं पानी ही पानी भरा है। अब उस स्थिति में जो भी जिस प्रकार के साधन हैं उन साधनों को उपयोग कर जानकारी प्राप्त करें। हम मौजूद रहेंगे तो पब्लिक में साहस रहेगा, पब्लिक में धैर्य रहेगा, हम मौजूद नहीं रहेंगे तो पब्लिक यह देखेगी कि राजनेता वोट लेने के लिये तो आते हैं और मौके के ऊपर वहां पहुंचते नहीं हैं। ऐसी स्थिति में मैं निवेदन करना चाहूंगा कि जो कुछ आपने कहा उसको मैं ध्यान रख रहा हूं और एक तारीख को जिस समय इसकी चर्चा होगी अपको भी छूट होगी और सरकार भी अपना पक्ष रखेगी।

श्री रामनारायण मीणा (नैनवां) : यह मौसम विभाग तो फेल हो गया इसके बारे में भी तो कुछ करो साहब।

श्री रतनलाल ताम्बी : अकाल वाली बात करो साहब।

श्री जितेन्द्र नीनामा (घाटोल) : अकाल राहत के कार्यों को एक माह के लिये आगे बढ़ाया जाये।

सदन की मेज पर रखे गये पत्रादि

अधिसूचना

सिंचाई विभाग

श्री अध्यक्ष : श्री देवीसिंह जी भाटी।

श्री देवीसिंह भाटी (सिंचाई मंत्री) : अध्यक्ष महोदय, मैं सिंचाई विभाग की अधिसूचना क्रमांक प. 28(8) सिंचाई/95 दिनांक 3 मई, 1996 जिसके द्वारा राजस्थान सिंचाई और जल-निकास नियम, 1955 में संशोधन किया गया है, सदन की मेज पर रखता हूं।

श्री अध्यक्ष : श्री रोहिताश्व जी।

परिवहन विभाग

श्री रोहिताश्व (राज्य मंत्री, परिवहन) : अध्यक्ष महोदय, मैं कार्य सूची में किये गये उल्लेख के अनुसार परिवहन विभाग की निम्न तीन अधिसूचनाएं सदन की मेज पर रखता हूं :—

(1) अधिसूचना संख्या प. 6 (125) परि/कर मुक्त/93 दिनांक 26 दिसम्बर, 1995 जिसके द्वारा छात्राओं एवं अध्यापकों को शैक्षणिक भ्रमण हेतु बसें कर मुक्त की गयी हैं;

(2) अधिसूचना संख्या प. 6(178) टी. आर/टेक्स/95 दिनांक 26 दिसम्बर, 1995 जिसके द्वारा केन्द्रीय सरकार के विभागों और उपक्रमों, पैरा-मिलिटरी बलों के अधिकारियों/कर्मचारियों और उच्च न्यायालय के माननीय न्यायाधीशों का अन्य राज्यों में स्थानान्तरण होने पर पदस्थापन की कालावधि में राजस्थान राज्य में अस्थाई उपयोग हेतु लाए हुए वाहन पर कर की छूट दी गयी है; एवं

(3) अधिसूचना संख्या प. 6(125) परि/कर मुक्त दिनांक 25 जनवरी, 1996 जिसके द्वारा छात्राओं एवं अध्यापिकाओं को शैक्षणिक भ्रमण हेतु बसें कर मुक्त की गयी हैं।

प्रतिवेदन एवं लेखे

सांभर साल्ट्स लिमिटेड का 30 वां वार्षिक (1994-95) प्रतिवेदन

श्री अध्यक्ष : श्री भाभड़ा साहब

श्री हरिशंकर भाभड़ा (उप मुख्य मंत्री) : अध्यक्ष महोदय, मैं कम्पनीज अधिनियम, 1956 की धारा 619 ए के अन्तर्गत सांभर साल्ट्स लिमिटेड का 30 वां वार्षिक प्रतिवेदन वर्ष 1994-95 सदन की मेज पर रखता हूं।

राजस्थान राज्य विद्युत मण्डल का वार्षिक (1996-97) वित्तीय विवरण

श्री अध्यक्ष : श्री रघुवीर सिंह जी।

श्री रघुवीर सिंह कौशल (ऊर्जा मंत्री) : अध्यक्ष महोदय, मैं विद्युत (प्रदाय) अधिनियम, 1948 की धारा 61(3) के अन्तर्गत राजस्थान राज्य विद्युत मण्डल का वार्षिक वित्तीय विवरण आय-व्ययक अनुमान वर्ष 1996-97 सदन की मेज पर रखता हूं।

राजस्थान स्टेट एग्रो इण्डस्ट्रीज कारपोरेशन लिमिटेड का 26 वां वार्षिक (1994-95) प्रतिवेदन एवं लेखे

श्री अध्यक्ष : श्री ज्ञानसिंह जी।

श्री ज्ञानसिंह चौधरी (राज्य मंत्री, कृषि) : अध्यक्ष महोदय, मैं कम्पनीज अधिनियम, 1956 की धारा 619 ए के अन्तर्गत राजस्थान स्टेट एग्रो इण्डस्ट्रीज कारपोरेशन लिमिटेड का 26वां वार्षिक प्रतिवेदन एवं लेखे वर्ष 1994-95 सदन की मेज पर रखता हूं।

श्री अध्यक्ष : शोकाभिव्यक्ति।

श्री परसराम मदेरणा : अध्यक्ष महोदय, यह प्रिसीडेंट फिर हाउस में नहीं होना चाहिये। यह परम्परा आज जो है यह कन्टीन्यू नहीं करनी चाहिये। मैं समझ रहा था कोई बहुत इम्पोर्टेन्ट मैटर है, they were merely notifications. यह बाद में रखे जा सकते थे। तीन दिन बाद में रखो तो कोई हर्ज नहीं था।

शोकाभिव्यक्ति

श्री भैरोंसिंह शेखावत (मुख्य मंत्री) : अध्यक्ष महोदय मैं पूर्व राष्ट्रपति श्री नीलम संजीव रेड्डी, असम के पूर्व मुख्य मंत्री श्री हितेश्वर सैकिया, तमिलनाडू की पूर्व मुख्य मंत्री श्रीमती जानकी रामचन्द्रन, राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ के सरसंघ चालक श्री बाला साहब देवरस, राजस्थान विधान सभा के भूतपूर्व सदस्य श्री नरपतसिंह बरबड़, श्री चिरंजीलाल गर्ग, श्री माधोसिंह भैसवाड़ा के देहावसान पर शोक प्रकट करता हूं। उनकी आत्मा को शांति मिले और उनके शोक संतप्त परिवार को इस दुःख को सहन करने की शक्ति मिले, यह मैं ईश्वर से प्रार्थना करता हूं।

अध्यक्ष महोदय, भूतपूर्व राष्ट्रपति श्री नीलम संजीव रेड्डी उस पुरानी पीढ़ी के अंतिम नेताओं में से एक थे जिन्होंने राष्ट्र की सेवा करने में किसी प्रकार की कोई कसर नहीं रखी। स्वतंत्रता संग्राम में लगातार संघर्ष करने वाला व्यक्ति और देश की आजादी के बाद निरन्तर किसी न किसी रूप में जनता की सेवा करने में आगे रहने वाला व्यक्ति हमारे बीच से उठकर चला गया।

अध्यक्ष महोदय, वह सबसे पहले मद्रास विधान सभा के सदस्य बने, वहां पर मंत्री बने उसके बाद में आन्ध्र प्रदेश जब बन गया तो आन्ध्र प्रदेश में मुख्य मंत्री तक पदस्थ रहे। उसके बाद में केन्द्रीय सरकार में आये, वहां कई विभागों के मंत्री रहे। दो बार लोकसभा के अध्यक्ष रहे और उसके बाद में हिन्दुस्तान के राष्ट्रपति बने। मैं ऐसा समझता हूं कि आप लोगों में जिसने भी उनसे भेंट की होगी वे सब इस बात को जानते होंगे कि वह आदमी बहुत ही ऊंचा चरित्रवान था। अपने विषय का ज्ञाता, अपनी बात को कहने में दृढ़ता और साहस, ये सब बातें नीलम संजीव रेड्डी का जीवन देखें तो अपने आप मिलती हैं।

एक काश्तकार के घर पैदा होकर हिन्दुस्तान के सर्वोच्च पद को सुशोभित करते हुए उन्होंने जनता की जिस प्रकार से सेवा की है उस सेवा को हिन्दुस्तान की जनता भूल नहीं सकती। अध्यक्ष के रूप में लोक सभा में जिस प्रकार की परम्पराओं का निर्माण उन्होंने किया है, वे आज हम सब के लिये अनुकरणीय हैं। मंत्री रहकर अपनी रेस्पांसिबिलिटी को किस प्रकार से डिस्चार्ज किया जाय और इसमें दृढ़ता किस प्रकार से प्रकट की जाय, इस सम्बन्ध में भी उनके अनेकों उदाहरण हैं। उस प्रकार का व्यक्ति हमारे बीच से उठ गया, यह इस देश की बहुत बड़ी क्षति हुई है।

अध्यक्ष महोदय, इसी प्रकार से आसाम के पूर्व मुख्यंत्री श्री हितेश्वर सैकिया आसाम विधान सभा के सदस्य रहे, आसाम विधान सभा में मंत्री रहे और आसाम के मुख्य मंत्री बने। उनका जिस प्रकार का सम्पर्क था उस

(श्री भैरोंसिंह शेखावत)

सम्पर्क के आधार पर वह इस जीवन में हमेशा केवल एक ही बात की चिन्ता करते रहे कि आसाम का विकास किस प्रकार से हो, आसाम के अन्दर जो प्रकृति ने सम्पदा दी है उस सम्पदा का लाभ ज्यादा से ज्यादा देश को, प्रदेश को किस प्रकार से मिले। उन्होंने प्रशासनिक दृष्टि से भी कई ऐसी सुदृढ़ और अनुकरणीय परम्पराएं रखी हैं जिन परम्पराओं का लाभ वहां की जनता को मिले और साथ ही देश के अन्य राज्यों में उसी प्रकार की परम्पराओं पर आचरण करने के लिये कई राज्य सरकारों को प्रेरित किया है।

आसाम में जिस समय उल्फा का और यह सारा एक प्रकार से संघर्ष चल रहा था, उस समय जनता का नेतृत्व करना आसान बात नहीं थी। लेकिन उस समय उन्होंने जनता का नेतृत्व किया और नेतृत्व के साथ-साथ इस संकट से आसाम की जनता को बचाया। मैं यह भी कह सकता हूं कि उनके समय में एक बार अपने राजस्थान के जो प्रवासी बंधु हैं उनके ऊपर कई प्रकार के आतंकवादियों ने अत्याचार किये थे। मैंने उनसे उस समय सम्पर्क किया, मैं उस समय मुख्य मंत्री भी नहीं था। केवल विधायक था। लेकिन जब उनसे चर्चा की तो मुझे इस बात की खुशी हुई कि उन्होंने यह आश्वासन दिया कि अगर राजस्थान के लोगों के साथ अन्याय होता है तो हितेश्वर सैकिया के साथ अन्याय होता है, मैं इसको रोकने की पूरी तरह से कोशिश करूंगा। वास्तव में उन्होंने उनको रोका और रोकने में वह सफल हुए। उस प्रकार का व्यक्ति हमारे बीच से उठकर चला गया, यह राष्ट्र को बहुत बड़ी क्षति है।

अध्यक्ष महोदय, तमिलनाडु की पूर्व मुख्य मंत्री श्रीमती जानकी रामचन्द्रन, इनका देहावसान हो गया। श्रीमती जानकी रामचन्द्रन एक कलाकार फैमिली से आयी थीं और कलाकार फैमिली से आने के बाद उनका जिस प्रकार का व्यवहार रहा, रामचन्द्रन की मृत्यु के बाद वह तमिलनाडु की मुख्य मंत्री बनीं। उन्होंने जो भी तमिलनाडु की सेवा हो सकती थी, वह सेवा की। उनका निधन हुआ, वह भी हमारे लिये बहुत बड़ी क्षति है।

श्री बाला साहब देवरस राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ के उच्च पद पर थे। मैं इतना कह सकता हूं कि उस व्यक्ति ने आजन्म एक ऐसा संगठन खड़ा करने की चेष्टा की, उस संगठन का विस्तार करने की चेष्टा की, जिस संगठन से देश के अच्छे नागरिकों का निर्माण हो। वह आजन्म अविवाहित रहे और अविवाहित रहकर घर छोड़ा, घर-परिवार की दृष्टि से जैसे कोई मोह ही नहीं हो। उन्होंने सारे देश को अपना परिवार समझ कर देश को इस प्रकार की आधारशिला पर खड़ा करने का प्रयत्न किया जिस देश में चौतरफा विकास हो और जिस देश में किसी भी प्रकार की लोगों के सामने पीड़ा नहीं रहे। उन्होंने जन-जागरण किया। जन-जागरण के साथ ही वह इमरजेंसी के दिनों में जेल में रहे। राष्ट्र निर्माण के हर कार्य में, व्यक्ति निर्माण के हर कार्य में उनका जिस प्रकार से भी दिशा-निर्देश हुआ है उसका विस्तार सारे देश में हुआ। लम्बे समय तक वह बीमार रहे और

(श्री भैरोंसिंह शेखावत)

उस बीमारी के बाद उनका देहावसान हुआ, यह भी इस देश के लिये बहुत बड़ी क्षति है।

श्री अध्यक्ष महोदय, श्री नरपतराम जी बरबड़__

श्री शांतिकुमार धारीवाल : एक त्रुटि रह गयी अनजाने में। ये चार व्यक्ति जिनके लिये आपने अभी फरमाया रेड्डी साहब, सैकिया साहब, जानकी रामचन्द्रन जी और बाला साहब देवरस, ये तो राजस्थान से बाहर के थे। तीन जो बाकी अब आएंगे, जो स्वर्गवासी हो गये, वे राजस्थान के थे। एक त्रुटि अनजाने में आपसे रह गयी है। मेरा ख्याल है कि बाल ठाकरे साहब की पत्नी को भी आज अपन शोकाभिव्यक्ति दे दें, तो ज्यादा अच्छा होगा।

श्री भैरोंसिंह शेखावत : अध्यक्ष महोदय, श्री नरपतराम जी बरबड़ राजस्थान सरकार के मंत्री भी रहे, राजस्व मंत्री थे। विधान सभा में राजस्व सम्बन्धी मामलों में जब भी कोई प्रश्न उठाये जाते थे, यह सारी चर्चा यहां काफी हुई है। बहुत सीधी प्रकृति के आदमी, बहुत ही मिलनसार। बहुत लंबी बीमारी के बाद उनका स्वर्गवास हुआ, यह भी राजस्थान के लिये बहुत बड़ी क्षति है। वे शिडयूल्ड कास्ट के लोगों की सेवा करने के प्रति जिस प्रकार से सक्रिय थे यह सदन भूल नहीं सकता। गरीबों के मामले जिस प्रकार से विधान सभा में रखे जाते थे और उनके द्वारा उनका समाधान करने की कोशिश की जाती थी, वह भी हमारे लिये एक प्रेरणादायक संदेश है।

श्री चिरंजीलाल जी गर्ग, अजमेर के रहने वाले थे, विधान सभा के सदस्य रहे। वकालत उनका पेशा था। वकालत के पेशे से जुड़े हुए होने के कारण जितनी भी विधि-विधान के सम्बन्ध में यहां चर्चाएं होती थीं उनमें श्री चिरंजीलाल जी गर्ग का निश्चित रूप से कंट्रीब्यूशन होता था। वह कंट्रीब्यूशन बड़ा प्रभावी होता था। प्रभावी कंट्रीब्यूशन के साथ अपने क्षेत्र की और अपने जिले की समस्याओं को रखकर उनका समाधान किस प्रकार से कराया जाए, वह समाधान भी होता था।

अध्यक्ष महोदय, श्री माधोसिंह जी भैसवाड़ा, मैं समझता हूं कि उनके समय के जो सदस्य हैं वे जानते हैं, खास तौर से कई माननीय सदस्य जो पुराने परिचित हैं वे जानते हैं कि वह एक हंसमुख आदमी थे। किसी समय उनके दिमाग पर कभी कोई टेंशन होना, वह अद्‌भुत बात होती थी। ऐसे व्यक्ति विधान सभा के सदस्य रहे, यहां सार्वजनिक निर्माण विभाग के उप मंत्री रहे। हमेशा कोई न कोई एक ह्यूमरस बात पैदा करना यह श्री माधोसिंह जी भैसवाड़ा की एक विशेषता थी। जालौर क्षेत्र के रहने वाले थे और जालौर क्षेत्र के विकास की उन्होंने सदा चिन्ता की, इस प्रकार की स्थिति है।

अध्यक्ष महोदय, मेरे मित्र श्री शांति कुमार जी धारीवाल ने जो बात कही उसको मैं स्वीकार करता हूं और श्री बाल ठाकरे की पत्नी का जो देहांत हुआ है मैं इस मौके पर उनके प्रति भी अपनी श्रद्धांजलि अर्पित करता हूं।

एक माननीय सदस्य : अभी तो लड़के का

(एक माननीय सदस्य)

देहांत हुआ था श्री शांतिकुमार जी धारीवाल साहब को पता ही नहीं है।

श्री हरिसिंह (कुम्हेर) : बाद में जो आदमी मरे उनको भी श्रद्धांजलि अर्पित की जाए, यह मेरा प्रस्ताव है॥

श्री परसराम मदेरणा (नेता, प्रतिपक्ष) : माननीय अध्यक्ष महोदय, डॉक्टर नीलम संजीव रेड्डी के निधन से हमने एक जननायक, राष्ट्रपति स्वतंत्रता संग्राम के एक दिग्गज देशभक्त, कुशल प्रशासक, विशिष्ट राजनीतिज्ञ और एक महान सपूत को खो दिया। उनके निधन से एक युग का अन्त हो गया, वर्तमान को अतीत से जोड़ने वाली एक सशक्त कड़ी टूट गयी।

श्री नीलम संजीव रेड्डी गांव में जन्मे, एक किसान के घर पले। स्वतंत्रता संग्राम में जूझे और कई बार जेल गये। मद्रास राज्य में, आन्ध्र प्रदेश राज्य में और राष्ट्रीय स्तर पर कई दायित्वों का निर्वहन करने का उनको अवसर मिला। जैसा कि अभी प्रस्ताव में सदन के नेता ने कहा, 1918 में सबसे पहले स्वतंत्रता संग्राम में, "सविनय अवज्ञा" आन्दोलन के अन्दर उन्होंने शिरकत की और कई बार जेल भी गये। 1946 में वे मद्रास विधान सभा के सदस्य थे, 1947 में वे भारतीय विधान सभा के सदस्य रहे। 1949-51 में वे मद्रास सरकार में मंत्री रहे। 1952 में वे राज्य सभा के सदस्य रहे। 1956 में आन्ध्र प्रदेश के मुख्य मंत्री और 1962-64 में 2 बार मुख्य मंत्री रहे। 1960 से लेकर 1962 तक वे इण्डियन नेशनल कांग्रेस के अध्यक्ष भी रहे।

अध्यक्ष महोदय, जब वे इण्डियन नेशनल कांग्रेस के अध्यक्ष थे तो मुझे कई बार उनके सम्पर्क में आने का अवसर मिला। वे स्मृतियां आज भी मेरे दिमाग में ताजा हैं, मैं उनको आज भी संजोए हुए हूं। भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस का अध्यक्ष किसी डिस्ट्रिक्ट कांग्रेस के प्रेसीडेंट को बराबर मिलने का अवसर दे। उनके व्यक्तित्व की मेरे जीवन के ऊपर एक अमिट छाप पड़ी। मैं उनसे जब 2-3 दफे मिला, तब जोधपुर में पधारने का उनसे निवेदन किया। तो 1960 में वे जोधपुर, केवल एक जिले के लिये आये। मेरे पास कुछ तस्वीरें भी हैं, मैं आपको कल दिखाऊंगा।

अभी तिरुपति में कांग्रेस का अधिवेशन था। उसमें मैं रेल से गया था, मेरा रिजर्वेशन रेल से था। तिरुपति जाने के बाद मैंने यह निश्चय किया कि मुझे बैंगलोर में नीलम संजीव रेड्डी से मिलना चाहिये। पाली से आने वाले माननीय सदस्य से मैंने कहा कि कोई कार की व्यवस्था हो सकती है? मैं बैंगलोर गया, उनसे पौन घण्टे तक मिला। वे भी मेरे साथ थे। 1960 में राजस्थान से उनका सम्बन्ध रहा। कमलाजी के बारे में उन्होंने मुझसे पूछा, मथुरादासजी माथुर के बारे में पूछा। कई व्यक्तियों के बारे में, जयनारायणजी व्यास और श्री माणिक्यलाल वर्मा की चर्चा की। 45 मिनट तक मुझसे बात की।

1984 में जब वे आये थे तो उस वक्त एयरपोर्ट के ऊपर भी मुझे उन्होंने स्वतः ही पहचान लिया। वे जोधपुर या उदयपुर कहीं जा

(श्री परसराम मदेरणा)

रहे थे। असेम्बली चल रही थी, मैं उनको रिसीव करने नहीं गया था, दूसरे दिन सी-ऑफ करने गया था। पहले रोज यहां मेरे विभाग पर डिमाण्ड चल रही थी। पांच मिनट तक खड़े रहे, हाथ मिलाकर बात की।

अध्यक्ष महोदय वे जहां भी रहे उन्होंने अपनी गरिमा और सम्मान के साथ दायित्व निभाया है। समय की, काल की रेत के ऊपर उनके निशान अभी तक साफ दिखाई देते हैं। वे 1967 में लोक सभा के अध्यक्ष बने और शायद तीन साल तक रहे। जब वे लोक सभा के अध्यक्ष थे, तब मुझे तीन दफे लोक सभा की स्पैक्टेटर्स गैलरी में जाने का अवसर मिला। जिस सरलता और सहज स्वभाव से सर्वानुमति से वे सदन का संचालन कर रहे थे। मैं यह नहीं कह रहा था कि उनसे ज्यादा बुद्धिमान और विद्वान लोकसभा के अध्यक्ष रहे, लेकिन हाउस का वातावरण हमेशा उत्तेजना से वे दूर रखते थे। यह हम सबके लिये एक प्रेरणा का स्रोत है और, अध्यक्ष महोदय, खास तौर से आपके लिये।

श्री नीलम संजीव रेड्डी किसान के घर पैदा हुए। एक किसान का बेटा राष्ट्रपति के सर्वोच्च पद पर पहुँचा। जो गरिमा और सम्मान उन्होंने इस पद को प्रदान किया, वह भी हमारे इतिहास के पन्नों में स्वर्ण अक्षरों से लिखी जाएगी। एक दृढ़ निश्चय वाले व्यक्ति एक संकल्पबद्धता के साथ में उन्होंने अपने व्यक्तित्व की छाप छोड़ी। दक्षिण भारत में उनकी ईमानदारी की मिसालें आज भी प्रचलित हैं। जब वे मुख्य मंत्री थे, तब हाई कोर्ट का एक जजमेंट हुआ था। उसमें सिर्फ यही था कि किसी आदमी को, कोई राजनीतिक कारणों से नहीं था, परमिट नहीं मिलना चाहिये। एक आदमी को एक बस चलाने की बात पर उनके खिलाफ कुछ एस्पर्शन थे। उस एक मुद्दे के ऊपर उस व्यक्ति ने मुख्य मंत्री के पद से इस्तीफा दे दिया। उनके न रहने से सार्वजनिक जीवन में बहुत बड़ा अभाव पैदा हो गया है। 1 जून, 1996 को उनका स्वर्गवास हो गया।

इसी तरह आसाम के भूतपूर्व मुख्य मंत्री हितेश्वर सैकिया साहब का भी 22 अप्रेल, 1996 को निधन हो गया। वे एक खेतिहर किसान के घर में पैदा हुए और एम. ए. तक शिक्षा प्राप्त की। अपने ही गांव के कॉलेज में 1959 में वे अध्यापक हो गये और वहीं पर 10 साल बाद में वाइस प्रिंसीपल के पद पर आये। साथ-साथ राजनीति में भी वे सक्रिय रहे और 1971 में पहली बार वे आसाम में पांचवीं विधान सभा के सदस्य निर्वाचित हुए। उस वक्त के मुख्य मंत्री श्री शरतचन्द्र सिन्हा, श्रीमती अन्वा तैमूर और केशव गोगोई तीनों मुख्य मंत्रियों के कार्यकाल में 1952 से लेकर 1982 तक लगातार विभिन्न विभागों के मंत्री रहे और उन्होंने अपने दायित्वों को बखूबी निभाया। दो बार वे मुख्यमंत्री भी रहे 1989 और 1991 में। मिजोरम के राज्यपाल भी रहे। लेकिन उनकी सबसे बड़ी जो देन है वह है आतंकवाद, उल्फा समस्या के समाधान के लिये सभी गुटों के साथ में समझौता करना। तीन वर्ष पूर्व ही बोडोलैण्ड स्वायत्त शासन परिषद के गठन के समझौते पर हस्ताक्षर किये। असम में अमन-चैन स्थापित करने में वे अपनी लम्बी बीमारी के आखिरी दम तक संलग्न रहे।

(श्री परसराम मदेरणा)

श्रीमती जानकी रामचन्द्रन का 19 मई, 1996 को निधन हो गया। जैसा कि मुख्यमंत्री ने कहा, वे एक कलाकार परिवार में पैदा हुई थीं। रामचन्द्रन के साथ में उनकी धर्मपत्नी के नाते उन्होंने तमिलनाडु की जनता की सेवा में पीछे रहकर हाथ बंटाया। वे स्वयं मुख्य मंत्री भी रहीं और 1991 में उन्होंने राजनीति से संन्यास ले लिया।

बाला साहब देवरस का निधन 17 जून, 1996 को हो गया। बाला साहब देवरस के नाम से विख्यात मधुकर दत्तात्रेय देवरस बारह वर्ष की आयु में ही संघ के संस्थापक डॉक्टर केशवराय बालीराव हेडगेवार से प्रभावित हुए और अपने समर्पण और नेतृत्व की क्षमता के कारण 1939 में संघ की नागपुर इकाई के कार्यवाहक महासचिव नियुक्त हुए। यह प्रारम्भ में संघ के प्रचारक रहे। उनके गुरु माधोरांव सदाशिव राव गोलवलकर ने इन्हें 1965 में अपना उत्तराधिकारी घोषित किया। जहां गोलवलकर ने संघ को वैचारिक स्वरूप प्रदान किया वहीं बाला सहाब देवरस ने अपने कार्यकाल में संघ को जन संगठन बनाया, संघ की हजारों शाखाओं की स्थापना की व सदस्य संख्या को लाखों में पहुंचाया। यह उनकी श्रेष्ठ संगठन कुशलता का ही परिणाम है।

बाला साहब देवरस एक समर्पित और निष्ठावान समाजसेवी थे और इस क्षेत्र में उनका योगदान बहुत महत्त्वपूर्ण रहा है। संघ के लाखों कार्यकर्ता और समर्थक बाला साहब देवरस को आदर्श की प्रतिमूर्ति मानते थे। जहां गोलवलकरजी ने संघ के चरित्र निर्माण का प्रभावी साधन बनाया वहीं संघ के विस्तार का श्रेय बाला साहब देवरस को है। राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ का सरसंघ चालक पोप या शंकराचार्य की तरह जीवन पर्यन्त के लिये चुना जाता है और वह अन्तिम सांसे ले रहा होता है, तभी उसके उत्तराधिकारी की घोषणा की जाती है। लेकिन बाला साहब देवरस ने अस्वस्थ होते हुए भी इस परम्परा को तोड़कर 11 मार्च, 1994 को यह पद मौजूदा सरसंघ चालक प्रो. राजेन्द्र सिंह को जो "रज्जू भैया" के नाम से विख्यात हैं, सौंप दिया। संघ के प्रमुख की हैसियत से अपने दो दशक के कार्यकाल में उन्होंने लाखों लोगों को समाज सेवा के लिए प्रेरित किया।

अध्यक्ष महोदय, श्री नरपतसिंह जी बरबड़ का 02 जून, 1996 को स्वर्गवास हो गया। उनके निधन से जोधपुर के सार्वजनिक क्षेत्र में काफी बड़ा अभाव उत्पन्न हुआ है। वे फलौदी तहसील के मेरे गांव के पास पीलवा के रहने वाले थे। बी. ए., एल. एल. बी. तक उन्होंने शिक्षा ग्रहण की। वे तीन बार विधान सभा के सदस्य रहे। सदन की कई कमेटियों के भी वे सदस्य रहे। वे सैण्ट्रल को-ऑपरेटिव बैंक, जोधपुर के चेयरमैन रहे और जिला कांग्रेस कमेटी के अध्यक्ष भी रहे।

अध्यक्ष महोदय, उनके व्यक्तित्व में विशेषता थी कि वे मिलनसार ही नहीं बहुत धैर्यवान व्यक्ति थे। मैंने कभी उनको अप्रसन्न होते हुए नहीं देखा और मेरी तरह उनको कभी उतावले होते हुए भी नहीं देखा। कई दफे कुछ कह भी दिया तो उनमें उसको पचाने की क्षमता

(श्री परसराम मदेरणा)

थी। वे जीवन भर किसानों की सेवा में कार्यरत रहे। किसानों की जब मैं बात करता हूं तो उसमें दलित वर्ग भी सम्मिलित है। उन्होंने सभी की हमेशा सेवा की। वे राजस्थान के सार्वजनिक जीवन में हमेशा आदर के साथ स्मरण किये जायेंगे।

श्री चिरंजीलाल जी गर्ग इस विधान सभा के छठी विधान सभा के सदस्य रहे। एक विधि विशेषज्ञ की हैसियत से यहां के विधायी कार्य में उनकी बहुत बड़ी भूमिका रही। वे विधान सभा के एक्टिव सदस्य थे। उनके निधन से भी राजस्थान के सार्वजनिक जीवन में क्षति पहुंची है।

श्री माधोसिंह जी भैसवाड़ा का पांच मई को निधन हो गया। श्री माधोसिंह जी का एक निराला व्यक्तित्व था। उनसे मिलकर कोई व्यक्ति ऐसा नहीं होगा जिसे प्रसन्नता नहीं हुई होगी। जिस तरह अपने इस सदन के माननीय सदस्य श्री वी. पी. सिंह साहब अपना ज्ञान संसार स्तर का रखते हैं उसी प्रकार से सभी प्रकार की समस्याओं के लिये वे चिन्तनशील रहते थे और हमेशा उनकी चर्चा किया करते थे। वे उप मंत्री भी रहे थे और उन्होंने अपने कार्य का संचालन बड़ी कुशलता से किया।

इन सभी राष्ट्रीय स्तर और राजस्थान स्तर के नेताओं का स्वर्गवास होने से राष्ट्र को बहुत बड़ा अभाव पैदा हुआ है और राजस्थान को जो क्षति पहुंची है वह अपूरणीय है। मैं इन सभी सातों दिवंगत आत्माओं के लिये परम पिता परमात्मा से प्रार्थना करता हूं कि वह उनकी आत्माओं को शांति प्रदान करे और उनके शोक संतप्त परिवार को इस अभाव को सहन करने की शक्ति दे।

श्री फतेह सिंह (कुशलगढ़) : अध्यक्ष महोदय, जो शोकाभिव्यक्ति का प्रस्ताव सदन के नेता ने रखा है उसमें मैं अपने आपको सम्मिलित करता हूं।

श्री नीलम संजीव रेड्डी, पूर्व राष्ट्रपति; श्री हितेश्वर सैकिया, पूर्व मुख्य मंत्री आसाम; श्रीमती जानकी रामचन्द्रन, पूर्व मुख्य मंत्री, तमिलनाडु; श्री बाला साहब देवरस, राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ के सरसंघ चालक; श्री नरपतसिंह बरबड़, सदस्य राजस्थान विधान सभा; श्री चिरंजीलाल गर्ग, सदस्य राजस्थान विधान सभा और श्री माधोसिंह भैसवाड़ा, सदस्य राजस्थान विधान सभा का स्वर्गवास हुआ है इन सभी के कार्यकलापों के सम्बन्ध में सदन के नेता ने और विपक्ष के नेता ने कह दिया है। इस मौके पर मैं इतना ही कहना चाहूंगा कि जो नेता देश के हित में काम करते हुए गये, उनके लिये हमें बड़ा दुःख है। मैं इस मौके पर ईश्वर से यह प्रार्थना करता हूं कि वह दिवंगत नेताओं को शांति दे और उनके परिवार को दुःख सहन करने की शक्ति प्रदान करे।

श्री अमराराम (धोद) : अध्यक्ष महोदय, पूर्व राष्ट्रपति नीलम संजीव रेड्डी; श्री हितेश्वर सैकिया, पूर्व मुख्य मंत्री आसाम; श्रीमती जानकी रामचन्द्रन, पूर्व मुख्य मंत्री, तमिलनाडु; श्री बाला साहब देवरस, राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ के सरसंघ चालक एवं इस सदन के पूर्व सदस्य

(श्री अमराराम)

श्री नरपतराम बरबड़, श्री चिरंजीलाल गर्ग एवं श्री माधोसिंह जी भैसवाड़ा हमारे बीच नहीं रहे। इन्होंने राष्ट्रीय स्तर पर और प्रान्त स्तर पर जो कार्य किया है, उसके बारे में सदन के नेता महोदय ने, प्रतिपक्ष के नेता महोदय ने और जनता दल के नेता ने विचार रखे हैं, विशेष तौर से इन्होंने राष्ट्र और प्रान्त की जो सेवा की है उस बारे में उनके निधन से रिक्तता पैदा हुई है। मैं प्रकृति से कामना करता हूं कि वह उनके परिवार को इस दुःख को झेलने की शक्ति दे। मैं दिवंगत आत्माओं को अपनी श्रद्धांजलि अर्पित करता हूं।

श्री शिवनाथ सिंह (गुढ़ा) : अध्यक्षजी, भारत के पूर्व राष्ट्रपति श्री नीलम संजीव रेड्डी हमारे बीच नहीं रहे। यह अतीत और वर्तमान के बीच की ऐसी कड़ी थी कि उस कड़ी के लोग हमसे एक-एक कर विदा हो रहे हैं। डॉक्टर रेड्डी को अपने जीवन में जहां भी देश सेवा करने का अवसर मिला उन्होंने देश की सेवा की। उन्होंने आजादी से पहले स्वतंत्रता आन्दोलन में भाग लिया, जेल गये। आजादी के बाद भी जो भी अवसर देश सेवा का हो सकता है, उनको मिला। डॉक्टर रेड्डी विधायक रहे, पार्लियामेंट के सदस्य रहे, मंत्री रहे, मुख्य मंत्री रहे, लोक सभा के अध्यक्ष रहे और अन्त में भारत के राष्ट्रपति जैसे सम्मानजनक पद पर वह रहे।

अध्यक्ष जी, जब उनके कार्यकाल का स्मरण होता है तो हमें यह सोचने को बाध्य होना पड़ता है कि कितना परिवर्तन आ गया। वह जब राष्ट्रपति बने तक देश की राजनीति में उथल-पुथल हो रही थी, संकट का समय था। उस काल में उन्होंने राष्ट्रपति की हैसियत से जो काम किये वे अविस्मरणीय हैं, हमेशा देश उनको याद करता रहेगा। सरकारें गिर रही थीं, बन रही थीं उस वक्त उन्होंने अपने नैतिक प्रभाव को काम में लिया और इस देश को जो संभव हो सकता था अच्छे रूप में प्रशासन दिलाने की चेष्टा की।

अध्यक्ष जी एक व्यक्ति जो इतने पदों पर रहे और आखिर में निष्कलंक होकर इस संसार से जाए, उस व्यक्ति के लिये इससे अधिक सम्मानजनक स्थिति कोई हो ही नहीं सकती। डॉक्टर रेड्डी उन गिने-चुने व्यक्तियों में से हैं जिन पर काल में शुरू से अंत तक कोई कलंक नहीं रहा, किसी ने उनकी आलोचना नहीं की। वह सर्वमान्य, सर्वप्रिय व्यक्ति थे। इस प्रकार के सरल हृदय व्यक्ति वह थे। लोक सभा की कार्यवाही का संचालन उन्होंने किया, राष्ट्रपति के पद पर रहते हुए देश की सेवा की, वह हमारे लिये अनुकरणीय है।

अध्यक्षजी, आसाम के पूर्व मुख्य मंत्री सैकियाजी ने आसाम की बहुत बड़ी सेवा की। वे सतत इस बात के लिये प्रयत्नशील रहे कि आसाम में शांति हो और एक अच्छे प्रान्त, विकासशील प्रान्त के रूप में आगे बढ़े। यह उनकी हमेशा से ही इच्छा रही और इसमें वह सतत प्रयत्नशील रहे।

अध्यक्षजी, श्रीमती जानकी रामचन्द्रन, बाला साहब देवरस ने अपने-अपने स्तर पर समाज की, देश की और अपने प्रान्तों की सेवा करने

(श्री शिवनाथ सिंह)

की चेष्टा की। उनकी सेवाएं भी राष्ट्र याद करता रहेगा।

श्री नरपतराम जी बरवड़, श्री चिरंजीलाल जी गर्ग और श्री माधोसिंह जी भैसवाड़ा इसी सदन के सदस्य रहे हैं। जैसा मुख्य मंत्री ने कहा, भैसवाड़ा साहब के साथ जिन लोगों को उठने-बैठने का, बात करने का अवसर मिला वे इस बात को महसूस करेंगे कि डील-डौल से वह जितने भारी थे अपने विचारें से भी उतने ही भारी थे। कभी भी किसी को उन्होंने नाराज होने का अवसर नहीं दिया। किसी भी बात पर वह उत्तेजित नहीं होते थे और हर बात को इतनी सहजता से टाल देते थे कि उनको उत्तेजित करने वाला व्यक्ति खुद ही आप को शर्मिंदा महसूस करता था। ऐसे वह व्यक्ति थे, हमेशा हंसी-मजाक में वह अपना काम करते थे। हमेशा उनकी वह तस्वीर सामने आती है।

अध्यक्षजी, इन तीनों माननीय सदस्यों ने इस विधान सभा के सदस्य रहते हुए अपने-अपने क्षेत्र में प्रान्त की सेवा करने की चेष्टा की और जिस वर्ग से, जिस समाज से वे आते थे उनके हित की चेष्टा की, उनका ध्यान रखा।

माननीय अध्यक्षजी, इन सभी दिवंगत आत्माओं को मैं अपनी श्रद्धांजलि अर्पित करता हूं और भगवान से प्रार्थना करता हूं कि इन आत्माओं को शांति प्रदान करे।

अध्यक्षजी, मैं एक बात और निवेदन करना चाहूंगा हो सकता है सदन में यह बाद में आये, इस बाढ़ में जिन लोगों की जानें गयी हैं उनको भी मैं श्रद्धांजलि अर्पित करता हूं। मेरे ख्याल से सदन इस मामले में मेरे साथ होगा कि उन लोगों को भी, जिनकी बाढ़ में जानें गयी हैं, हम श्रद्धांजलि पेश करें। इन्हीं शब्दों के साथ मैं अपनी बात समाप्त करता हूं।

श्रीमती इन्दिरा मायाराम (सांगानेर) : अध्यक्ष महोदय, भारत के पूर्व राष्ट्रपति, श्री नीलम संजीव रेड्डी के साथ मुझे भी काम करने का बहुत समय तक मौका मिला है। इसलिये मैं यह निवेदन करना चाहती हूं कि हमारे पूर्व राष्ट्रपति, नीलम संजीव रेड्डी एक देशभक्त ही नहीं बहुत कर्मनिष्ठ और एक बहुत बड़े स्वतंत्रता सेनानी थे। वह मेरे पिताजी के साथी तो थे ही, किन्तु जब वह प्रेसीडेंट बने कांग्रेस के, पहली बार जयपुर आये। उनका 56 बैलों का जुलूस निकला तो उसमें मैं भी उनके साथ बैठकर निकली थी। उसके बाद मैं वह अध्यक्ष थे और मुझे अखिल भारतीय युवक कांग्रेस की महामंत्री के नाते भी उनके साथ काम करने का मौका मिला। अभी आठ महीने पहले जब मैं बैंगलोर गयी थी अपने कार्यक्रम के सम्बन्ध में तब भी मैं उनसे मिलने गयी थी। उनका स्वास्थ्य अच्छा नहीं था उसके बावजूद भी जिस विश्वास के साथ और जिस निश्चय के साथ उन्होंने राजनीतिक चर्चा की ऐसा लगता नहीं था कि वह इतनी जल्दी चले जाएंगे। उनके निधन से देश ने एक बहुत बड़े नेता को खो दिया है।

श्री माधोसिंह भैसवाड़ा साहब से भी मेरे बहुत अच्छे सम्बन्ध थे, क्योंकि वह हमारे साथ कांग्रेस में थे। जैसा कि अभी माननीय सदस्य

(श्रीमती इन्दिरा मायाराम)

बता रहे थे, वह बड़े मजाकिया भी थे। जब भी घर आते थे तो बहुत हंसी-मजाक करते रहते थे। उनके निधन पर भी मैं बहुत शोक व्यक्त करती हूं।

इसके साथ-साथ अभी जो शोक प्रस्ताव रखा गया है उसमें श्री बाला साहब देवरस, श्री हितेश्वर सैकिया जी, श्रीमती जानकी रामचन्द्रनजी, श्रीमती बाल ठाकरे, श्री नरपतराम जी बरबड़ और श्री चिरंजीलाल जी गर्ग, इन सब के निधन पर भी मैं बहुत शोक व्यक्त करती हूं।

मुझे इस बात की खुशी है कि मुख्य मंत्रीजी ने श्रीमती बाल ठाकरे जी का ध्यान रखा। नेता जितना काम करते हैं, उससे अधिक उनकी पत्नी को तकलीफ सहनी पड़ती है। मुझे बहुत अच्छा लगा कि आपने उनकी पत्नी को इज्जत दी। वे भी उतनी ही तकलीफ पाती हैं, उनको भी उतना ही काम करना पड़ता है। भगवान उनके परिवार को शांति दे।

इनके निधन पर हम शोक व्यक्त करते हैं और देश को इनके जाने से जो क्षति हुई है उस क्षति को सहन करने की भगवान शक्ति दे, यह मैं प्रार्थना करूंगी।

श्री अध्यक्ष : माननीय सदस्यगण, शोकाभिव्यक्ति के इस अवसर पर इस सदन में माननीय सदन के नेता, प्रतिपक्ष के नेता, अन्य दलों के नेताओं एवं सदस्यों ने श्री नीलम संजीव रेड्डी, पूर्व राष्ट्रपति; श्री हितेश्वरजी सैकिया, मुख्य मंत्री, आसाम; श्रीमती जानकी रामचन्द्रन, पूर्व मुख्य मंत्री, तमिलनाडु; श्रीमान बाला साहब देवरस, पूर्व सरसंघ चालक, राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ तथा इस विधान सभा के पूर्व सदस्य श्री नरपतराम जी बरबड़, श्री चिरंजीलाल गर्ग, श्री माधोसिंह जी भैसवाड़ा और श्रीमती बाल ठाकरे के प्रति जो शोक प्रस्ताव कियां है एवं संवेदना प्रकट की है, उसमें मैं अपने आपको भारी दिल से सम्मिलित करता हूं।

भारत के पूर्व राष्ट्रपति श्री नीलम संजीव रेड्डी का जन्म 19 मई, 1913 को आन्ध्र प्रदेश के अनंतपुर जिले के इल्लपुर गांव में हुआ। आपकी शिक्षा अडयार (मद्रास) के थियोसोफिकल हाई स्कूल एवं अनंतपुर के आर्ट्स कॉलेज में हुई।

श्री रेड्डीजी ने 25 जुलाई, 1977 को भारत के छठे राष्ट्रपति के रूप में शपथ ग्रहण की। आप वर्ष 1967 से 1970 एवं 25 मार्च, 1977 से 21 जुलाई, 1977 तक लोक सभा के सदस्य रहे। आप चौथी लोक सभा में वर्ष 1967 से 1969 व छठी लोक सभा में 26 मार्च से 13 जुलाई, 1977 तक लोक सभा अध्यक्ष के पद पर आसीन रहे। वर्ष 1952 में आप राज्य सभा के लिए सांसद चुने गये लेकिन वर्ष 1953 में आपने अपनी सदस्यता से त्याग पत्र दे दिया। वर्ष 1964 में आप दूसरी बार राज्य सभा के सांसद चुने गये।

आप जून, 1964 से जनवरी, 1966 तक केन्द्र सरकार में इस्पात व खान मंत्री एवं जनवरी, 1966 से मार्च, 1967 तक विमानन और नौवाहन तथा पर्यटन मंत्री रहे। आप वर्ष

(श्री अध्यक्ष)

1956 और वर्ष 1962-64 में आन्ध्र प्रदेश के मुख्य मंत्री एवं वर्ष 1953 में आन्ध्र प्रदेश के उप मुख्य मंत्री रहे। आप वर्ष 1946 में मद्रास विधान सभा के सदस्य चुने गये तथा वर्ष 1949-51 में मद्य निषेध, आवास एवं वन मंत्री रहे। वर्ष 1951 में आप मंत्री पद से त्याग पत्र देकर आन्ध्र प्रदेश कांग्रेस के अध्यक्ष चुने गये। वर्ष 1959 से 1962 तक आप अखिल भारतीय कांग्रेस के अध्यक्ष भी रहे।

स्वतन्त्रता संग्राम में भी आपने महत्वपूर्ण भूमिका निभायी। आप 18 वर्ष की आयु में ही पढ़ाई छोड़कर सत्याग्रह में शामिल हो गये। सविनय अवज्ञा आन्दोलन में भाग लेने के कारण आपको वर्ष 1940 से 1945 के दौरान कई बार जेल यात्राएं भी करनी पड़ीं। आप आजादी के बाद वर्ष 1947 में भारत की संविधान सभा के सदस्य भी रहे। लोकतंत्र और सार्वजनिक जीवन में उच्च मानदण्ड बनाये रखने के लिये प्रतिबद्ध रहे श्री रेड्डी जी ने अनेक सार्वजनिक पदों पर रहते हुए उल्लेखनीय कार्य किये।

आपने ब्रिटेन, फ्रांस, पश्चिम जर्मनी, स्विट्जरलैण्ड, हंगरी, पौलैण्ड, सोवियत संघ, केन्या, जाम्बिया, युगांडा, आस्ट्रेलिया, अमेरिका, कनाडा, सहित अनेक देशों की यात्राएं कीं।

श्री नीलम संजीव रेड्डी का 1 जून, 1996 को निधन हो गया।

आसाम के मुख्य मंत्री, श्री हितेश्वर जी सैकिया का जन्म आसाम के शिवसागर जिले के नजरिया कस्बे में वर्ष 1938 में हुआ। आपने लखनऊ विश्वविद्यालय से इतिहास विषय में एम. ए. की उपाधि प्राप्त की।

श्री सैकिया जी ने वर्ष 1959 में अपने गृह जिले के गोरेगांव कॉलेज में अध्यापन शुरू किया। बाद में आप इसी कॉलेज के वाइस प्रिंसीपल बने। वर्ष 1961 से 1967 तक आप नजरिया टाउन कमेटी के उपाध्यक्ष रहे।

श्री सैकिया जी प्रथम बार वर्ष 1972 में पांचवीं असम विधान सभा में सदस्य निर्वाचित हुए और असम सरकार में गृह, स्वास्थ्य एवं जन सम्पर्क विभाग के राज्य मंत्री बनाये गये। वर्ष 1978 में पुनः निर्वाचित होने के बाद श्री सैकिया जी असम के गृह मंत्री बनाये गये तथा आपको शिक्षा विभाग का दायित्व भी सौंपा गया। श्री सैकिया जी ने वर्ष 1982 तक दोनों विभागों की बागडोर बखूबी संभाली।

वर्ष 1983 में श्री सैकिया जी प्रथम बार असम के मुख्य मंत्री बनाये गये तथा वर्ष 1991 में आप दूसरी बार राज्य के मुख्य मंत्री बने। श्री सैकिया जी वर्ष 1986 में मिजोरम के राज्यपाल भी रहे।

असम के विकास के प्रति सदैव प्रयत्नशील रहे श्री सैकिया ने राज्य में फैले आतंकवाद से निपटने के लिये कई महत्त्वपूर्ण कदम उठाये। आप सामाजिक और आर्थिक दृष्टि से पिछड़े तथा विद्रोही गतिविधियों से ग्रसित देश के सीमावर्ती पूर्वोत्तर क्षेत्र में अमन-चैन और सम्पन्नता लाने के लिये सतत् प्रयत्नशील रहे। आपके अथक प्रयासों के फलस्वरूप 20

(२८)

(श्री अध्यक्ष)

फरवरी, 1993 को हुआ "बोड़ो समझौता" राज्य में शांति स्थापना की दिशा में महत्त्वपूर्ण कदम था।

श्री हितेश्वर जी सैकिया का निधन 22 अप्रेल, 1966 को हो गया।

तमिलनाडु की पूर्व मुख्य मंत्री, श्रीमती जानकी रामचन्द्रन का जन्म उत्तर केरल में कलाकारों के एक परिवार में हुआ। पारिवारिक विरासत में मिली कला की प्रतिभा के कारण आपने चालीस के दशक में तमिल फिल्म जगत में प्रवेश किया।

श्रीमती रामचन्द्रन जी का राजनीतिक जीवन अल्प ही रहा। दिसम्बर, 1987 में श्री रामचन्द्रन जी के निधन के बाद सत्तारूढ़ अन्ना द्रमुक पार्टी का विभाजन हुआ और श्रीमती रामचन्द्रन जी तमिलनाडु की मुख्य मंत्री बनीं। लेकिन जनवरी, 1988 में उनकी सरकार विधान सभा में अपना बहुमत खो बैठी। वर्ष 1991 के विधान सभा चुनावों के बाद श्रीमती रामचन्द्रन जी ने राजनीति से संन्यास ले लिया।

श्रीमती जानकी रामचन्द्रन जी का 19 मई, 1996 को निधन हो गया।

बाला साहब जी देवरस के नाम से प्रख्यात श्री मधुकर दत्तात्रेय देवरस का जन्म नागपुर में 5 नवम्बर, 1915 को हुआ। आपने नागपुर में ही मैट्रिक करने के बाद मोरिस कॉलेज से स्नातक तथा विधि स्नातक की उपाधियां प्राप्त कीं।

राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ के संस्थापक डॉ. केशवराव बालीराव जी हेडगेवार से प्रभावित होने के कारण आप संघ के प्रति आकृष्ट हुए और वर्ष 1939 में संघ की नागपुर इकाई के कार्यवाही (महासचिव) नियुक्त किये गये तथा शीघ्र ही संघ के पूर्णकालिक "प्रचारक" बन गये। वर्ष 1973 में आपको सरसंघ चालक नियुक्त किया गया। इस पद पर नियुक्ति के अवसर पर आपने आजीवन अविवाहित रहने का जो संकल्प लिया वह संघ के प्रति आपके पूर्ण समर्पण का द्योतक है। आपने आपातकाल के दौरान 21 माह की जेल यात्रा की। आप राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ के अनेक महत्त्वपूर्ण पदों पर रहे।

आपका सम्पूर्ण जीवन देश सेवा के लिये समर्पित रहा। नवम्बर, 1977 में आन्ध्र प्रदेश में आये समुद्री तूफान से हुई तबाही से प्रभावित लोगों को राहत पहुंचाने व बचाव कार्य आपके निर्देश से ही सम्पन्न हुए। आप हिन्दी व मराठी में प्रकाशित दैनिक "नरकेसरी" प्रकाशन से भी जुड़े रहे। अध्ययन में बेहद रुचि रखने वाले श्री देवरस जी का रुझान खेलों के प्रति भी रहा। आप विद्यालयी जीवन से ही "खो-खो" के श्रेष्ठ खिलाड़ी माने जाते थे।

श्री बाला साहब जी देवरस का दिनांक 17 जून, 1996 को निधन हो गया।

श्री नरपतराम जी बरवड़ का जन्म दिनांक 22 जनवरी, 1941 को जोधपुर जिले की फलौदी तहसील के पीलवा ग्राम में हुआ। आपने जोधपुर विश्वविद्यालय से बी. ए., एल. एल. बी. की उपाधियां प्राप्त कीं।

(श्री अध्यक्ष)

श्री बरबड़ जी प्रथम बार राजस्थान विधान सभा के लिये 1977 में जोधपुर जिले के सुरक्षित निर्वाचन क्षेत्र सूरसागर से भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के प्रत्याशी के रूप में निर्वाचित हुए। वर्ष 1980 एवं 1985 में भी आप इसी विधान सभा क्षेत्र से सातवीं एवं आठवीं राजस्थान विधान सभा के लिये निर्वाचित हुए। आठवीं विधान सभा के कार्यकाल के दौरान आप श्री शिवचरण जी माथुर के मंत्रिमण्डल में 6 फरवरी, 1988 को राजस्व मंत्री बनाये तथा श्री हरिदेव जोशी के मंत्रिमण्डल में भी आपने इसी विभाग के दायित्वों का निर्वहन किया।

विधान सभा के कार्यकाल के दौरान आप राजकीय उपक्रम समिति, अधीनस्थ विधान सम्बन्धी समिति एवं याचिका समिति के सदस्य रहे। आप वर्ष 1985-86 एवं 1986-87 में अनुसूचित जाति कल्याण समिति के सभापति भी रहे।

राजनीतिक जीवन में पदार्पण से पूर्व आपने वकालत की तथा अनेक संस्थाओं से सम्बद्ध रहे। वर्ष 1980 में आप जोधपुर विश्वविद्यालय की सिंडीकेट तथा वर्ष 1982 में राजस्थान राज्य जल प्रदूषण निवारण तथा नियन्त्रण बोर्ड के सदस्य रहे। आप देहात जिला कांग्रेस के अध्यक्ष एवं जोधपुर के सैंट्रल को-आपरेटिव बैंक के चेयरमैन भी रहे।

समाज सेवा में आपकी विशेष अभिरुचि रही। अनुसूचित जाति व समाज सुधार के क्षेत्र में आपका महत्वपूर्ण योगदान रहा।

श्री नरपतराम जी बरबड़ का दिनांक 2 जून, 1996 को निधन हो गया।

पूर्व विधायक श्री चिरंजीलाल जी गर्ग का जन्म 6 जुलाई, 1924 को हुआ। आपने बी. एस. सी. एवं एल. एल. बी. की उपाधि प्राप्त करने के बाद वकालत प्रारम्भ की।

श्री गर्ग जी छठी राजस्थान विधान सभा (1977-80) के लिये पुष्कर से जनता पार्टी के प्रत्याशी के रूप में सम्मिलित हुए। विधान सभा में आप वर्ष 1979-80 में पुस्तकालय समिति के सभापति रहे।

श्री गर्ग जी चार दशक तक राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ से जुड़े रहे तथा आपातकाल के दौरान आप 19 माह जेल में रहे। वर्ष 1948-49 में आप राजस्थान विद्यार्थी परिषद् के जनरल सैक्रेटरी बनाये गये। तत्पश्चात् वर्ष 1969-70 में नगर परिषद्, अजमेर के उपाध्यक्ष भी चुने गये। समाज सेवा के अतिरिक्त खेलकूद में भी आपकी विशेष अभिरुचि रही।

श्री चिरंजीलाल जी गर्ग का दिनांक 1 अप्रेल, 1996 को निधन हो गया।

पूर्व विधायक श्री माधोसिंह जी भैसवाड़ा का जन्म 18 नवम्बर, 1922 को जालौर में हुआ। आपने मेयो कॉलेज से शिक्षा प्राप्त की।

श्री भैसवाड़ा जी प्रथम राजस्थान विधान सभा (1952-57) के लिये जालौर "ए" निर्वाचन क्षेत्र से राम राज्य परिषद के प्रत्याशी के रूप में निर्वाचित हुए। आप द्वितीय (1957-62) एवं चौथी (1967-1972)

(श्री अध्यक्ष)

विधान सभा के लिये आहोर से भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के प्रत्याशी के रूप में निर्वाचित हुए। आप सुखाड़िया मंत्रिमण्डल में 4 सितम्बर, 1967 से 8 जुलाई, 1971 तक सार्वजनिक निर्माण विभाग के उप मंत्री रहे।

विधायक के रूप में आप अपने क्षेत्र के विकास के लिए सतत् प्रयत्नशील रहे। आप प्रान्तीय कांग्रेस पार्टी एवं अखिल भारतीय कांग्रेस के सदस्य भी रहे।

श्री माधोसिंह जी भैसवाड़ा का दिनांक 5 मई, 1996 को निधन हो गया।

श्री बाल ठाकरे जी की धर्म पत्नी को भी मैं अपनी श्रद्धांजलि देता हूं।

मैं दिवंगत सभी व्यक्तियों को अपनी ओर से और इस सदन के समस्त माननीय सदस्यों की ओर से श्रद्धांजलि अर्पित करता हूं। मैं ईश्वर से प्रार्थना करता हूं कि उनकी आत्मा को शांति प्रदान करे और उनके शोक संतप्त परिजनों को उनका बिछोह सहन करने की शक्ति प्रदान करे।

माननीय सदस्यगण, कृपया दो मिनट मौन खड़े रहकर दिवंगत व्यक्तियों की आत्माओं की शांति के लिये प्रार्थना करें।

(माननीय सदस्यगण ने दो मिनट मौन खड़े रहकर दिवंगत व्यक्तियों की आत्माओं की शांति के लिये प्रार्थना की)

सदन की बैठक सोमवार, दिनांक 1 जुलाई, 1996 के 11.00 बजे तक के लिये स्थगित की जाती है।

(तदनन्तर सदन की बैठक 12.30 बजे सोमवार, दिनांक 1 जुलाई, 1996 के 11.00 बजे तक के लिये स्थगित हुई।)

■□■